वन्दे मातरम्

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

बीसवाँ अंक 2020

राज भवन

राइटर्स बिल्डिंग

ट्रेजरी बिल्डिंग्स

राष्ट्रीय संग्रहालय

राष्ट्रीय पुस्तकालय

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 19वें अंक का विमोचन समारोह।

tmwallpapers.com

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी पत्रिका

वन्दे मातरम्

अर्धवार्षिक पत्रिका 2019-2020 बीसवाँ अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

पत्रिका परिवार

संरक्षक	:	श्रीमती अदिति रॉय चौधुरी प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
परामर्शदातृ समिति	:	श्री राहुल कुमार, उपमहालेखाकार (प्रशासन) श्री शीश राम, उपमहालेखाकार (पेंशन)
प्रधान संपादक	:	श्री रेबती रंजन पोद्दार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक	:	श्री चन्दन कुमार बढ़ई, हिन्दी अधिकारी
उपसंपादक	:	श्री सन्नी कुमार, कनिष्ठ अनुवादक
सहायक	:	श्री कुन्दन कुमार रविदास, कनिष्ठ अनुवादक श्री जितेंद्र शर्मा, वरिष्ठ लेखाकार श्री अमित कुमार, वरिष्ठ लेखाकार
टंकण कार्य	:	श्री अतुल कुमार, लेखाकार

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना
जरूरी नहीं हैं क्योंकि वे उनके निजी विचार होते हैं।

अदिति रॉय चौधुरी

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक),पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स,कोलकाता – 700001

संदेश

कार्यालयी हिन्दी पत्रिका 'वन्दे मातरम्' के बीसवें अंक को आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत खुशी हो रही है। इस पत्रिका ने राजभाषा हिन्दी के विकास पथ पर अग्रसर होने के क्रम में हमारे कार्यालय के रचनाकारों के विचार आप तक प्रेषित करने का प्रयास किया है। मैं आशा करती हूँ कि इस अंक को भी पहले की भांति स्नेह एवं सराहना मिलेगी।

अंत में इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में जुड़ें सभी कार्मिकों को बधाई देती हूँ, साथ ही पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

अदिति रॉय चौधुरी

राहुल कुमार

उपमहालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'वन्दे मातरम' का बीसवाँ अंक आप सभी के समक्ष सहर्ष प्रस्तुत है। पत्रिका का निरंतर प्रकाशन राजभाषा के विकास का सूचक है।

कार्यालयी हिन्दी पत्रिका 'वन्दे मातरम' ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच हिन्दी के प्रति अभिरुचि बढ़ाने का प्रशंसनीय कार्य किया है। मुझे विश्वास है कि हिन्दी पत्रिका 'वन्दे मातरम' का बीसवाँ अंक भी अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल साबित होगा ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन पर पत्रिका परिवार को बधाई एवं पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य हेतु मेरी शुभकामनाएँ ।

राहुल कुमार

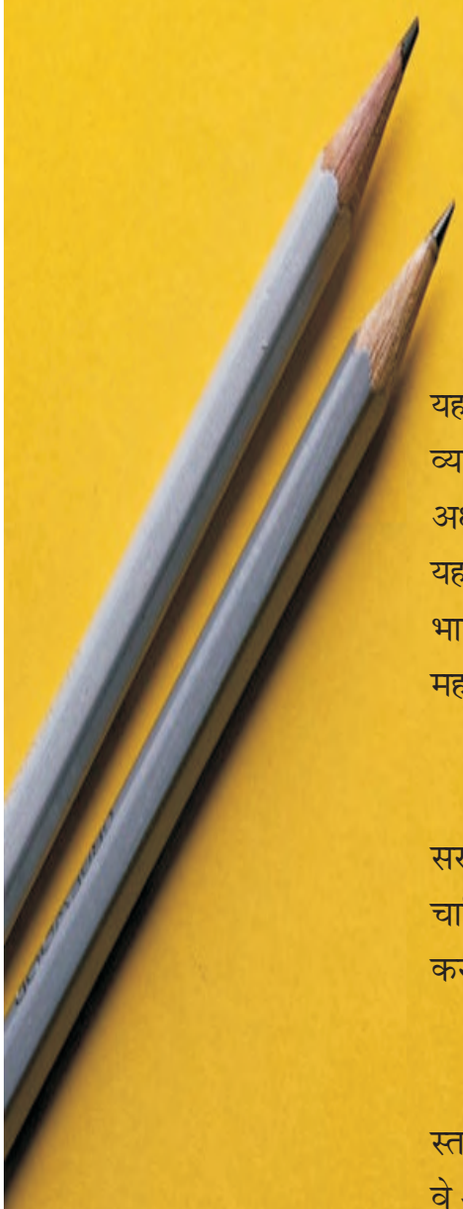

संपादकीय

हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "वंदे मातरम्" का बीसवाँ अंक आपके समक्ष है। यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को हिन्दी में व्यक्त करने का साधन है। भारत एक बहुभाषिक देश है। हिन्दी इस भाषायी विविधता को अक्षुण्ण बनाए रखते हुए अपनी स्वीकार्यता स्थापित करने में सफल रही है। कारण कदाचित यह है कि हिन्दी अत्यंत सहज, सरल, वैज्ञानिक एवं बोधगम्य भाषा है। वर्तमान में हिन्दी भाषा का उपयोग इंटरनेट जगत में अत्यधिक हो रहा है। साहित्य एवं सिनेमा में भी हिन्दी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

यदि कार्यालयी हिन्दी की बात करें तो मेरा मत है कि कार्यालयी हिन्दी यथासंभव सरल होनी चाहिए। कठिन एवं दुरूह शब्दों के स्थान पर सहज शब्दों के प्रयोग पर बल देना चाहिए। साथ ही कार्यालय में टिप्पणी, मसौदा, रिपोर्ट आदि अँग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद न कर मौलिक हिन्दी में ही तैयार किए जाने पर भी बल देना चाहिए।

इस पत्रिका को आकार देने में लेखकों के योगदान हेतु आभारी हूँ। इस पत्रिका को स्तरीय एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने का यथेष्ट प्रयास किया गया है। सुधी पाठकों से आग्रह है कि वे अपने बहुमूल्य सुझाओं से हमें अवगत कराएँ कि हम अपने प्रयासों में कहाँ तक सफल हो पाएँ हैं।

चन्दन कुमार बढ़ई

(संपादक)

आपके पत्र..........

पंजीकृत-डाक/शीघ्र-डाक

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) गुजरात, राजकोट
Office of the Accountant General (A&E) Gujarat, Rajkot.

हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव/2019-20/62
दिनांक 21.02.2020

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता - 700001

विषय : हिंदी पत्रिका 'वंदे-मातरम' के 19वें अंक की प्राप्ति ।

महोदय,

आपका ईमेल दिनांक 03.02.2020 प्राप्त हुआ है। जिसके तहत आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'वंदे-मातरम' के 19वें अंक की सॉफ्ट प्रति का अवलोकन किया गया। ई-पत्रिका अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका का छायांकन अत्यकर्षक है। पत्रिका पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की हैं। इसके लिए रचनाकारों को विशेष बधाई। 'वंदे-मातरम' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ।

'गिरनार' पत्रिका परिवार आपकी पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता है।

शुभकामनाओं सहित ।

भवदीय

(एस.जे. पारेख)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

सत्यमेव जयते

OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.

संख्या: हिंदी कक्ष/विभागीय पत्रिका उत्तर/2019-20/275
दिनांक: 05.02.2020

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक),
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता-700001

विषय: अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'वंदे मातरम्' के उन्नीसवें अंक का प्रेषण।

महोदय,

आपके पत्र सं. पी.ए.जी.ए.ई.डब्ल्यू.बी./02/05/वं.मा./14/2019-20 दिनांक 03.02.2020 के साथ ई-मेल द्वारा हिंदी ई-पत्रिका 'वंदे मातरम्' के उन्नीसवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं आवरण पृष्ठ अति सुंदर है। रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यंत सार्थक एवं विषयानुकूल हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। विशेष रूप से 'कराहता बचपन', 'बालिका वधू', 'दैव-दैव आलसी पुकारा', 'घर जमाई', 'आत्म जागरण', 'रमा', 'प्यार की पुकार' एवं 'श्री रामकृष्ण परमहंस' आदि रचनाएं अत्यंत सुरुचिपूर्ण एवं सराहनीय हैं। पेपरलैस की तरफ यह एक प्रशंसनीय प्रयास है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

दूरभाष: 0172-2660704, 2615377 फैक्स: 0172-2610488, 2607732 ई-मेल: agauharyana@cag.gov.in D:\Hindi Cell\at_Hindicell_DDJ_Mangal.doc

---

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपूर
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)-II, MAHARASHTRA, NAGPUR

सं.हिंदी अनुभाग/ प्रतिक्रिया/22/2019-20/जा.क्र. 412
दिनांक 12-02-2020

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी (प्रशासन हिन्दी सेल),
कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता-700001

विषय:- हिंदी गृह पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 19 वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "वंदे मातरम्" के 19 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री चन्दन कुमार की रचना "बालिका वधू", श्रीमती आस्था गुप्ता की रचना "कराहता बचपन" तथा "रमा", श्री अमित कुमार की रचना "सपनों का महल", श्रीमती सुस्मिता सरकार की रचना "श्री रामकृष्ण परमहंस" आदि उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है । कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'लेखापरीक्षा भवन', डाक थैली क्र.220, सिविल लाईन्स, नागपूर-440001
दूरभाष / Telephone - 0712-2564506 To 2564510
फैक्स / Fax - 0712-2524130

'Audit Bhavan', Post Bag No. 220, Civil Lines, Nagpur-440001
website : http://agmaha.cag.gov.in
e-mail : agaumaharashtra2@cag.gov.in

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक
Date : 05.03.2020

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी (प्रशासन हिन्दी सेल)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700001

विषय:- पत्रिका की पावती प्रेषित करने संबंधी ।
संदर्भ:-आपका पत्र सं.पी.ए.जी.ई.डबल्यू.बी./02/05/व.मा./14/2019-20 दिनांक 03.05.2019

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका **"वंदे मातरम्"** का ई-प्रकाशन वर्ष 2019-20 की प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका की यह प्रतियां भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार । भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं । इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं । पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक है ।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है । सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पोस्ट - मांढर, जीरो प्वाइंट, रायपुर - 493 111 (छत्तीसगढ़)
Post - Mandhar, Zero Point, Raipur - 493 111 (Chhattisgarh)

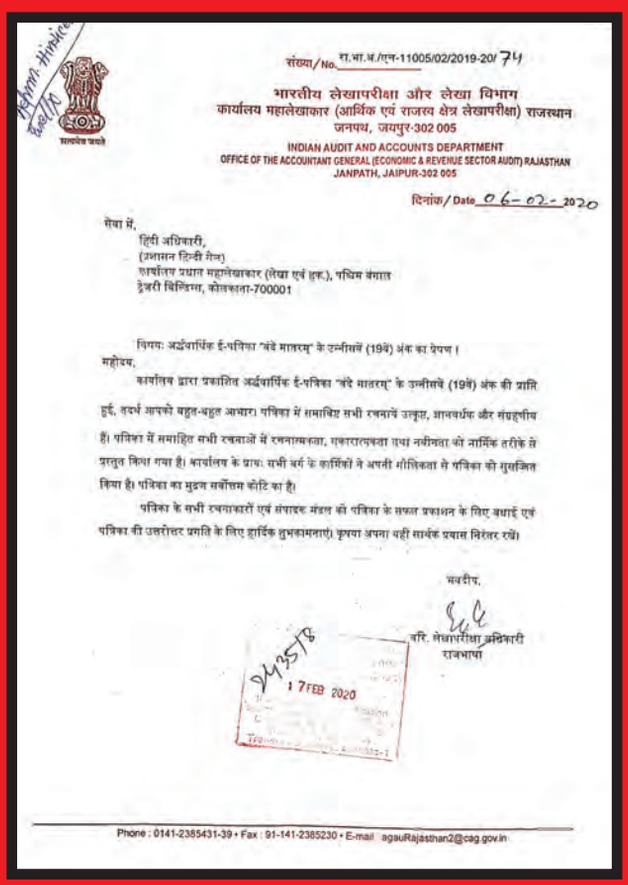

संख्या/No. रा.भा.अ./एन-11005/02/2019-20/ 74

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) राजस्थान

जनपथ, जयपुर-302 005

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (ECONOMIC & REVENUE SECTOR AUDIT) RAJASTHAN

JANPATH, JAIPUR-302 005

दिनांक/Date 06-02-2020

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
(प्रशासन हिन्दी सैल)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पश्चिम बंगाल
ट्रेज़री बिल्डिंग्स, कोलकाता-700001

विषय: अर्द्धवार्षिक ई-पत्रिका "वंदे मातरम्" के उन्नीसवें (19वें) अंक का प्रेषण।

महोदय,

कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्द्धवार्षिक ई-पत्रिका "वंदे मातरम्" के उन्नीसवें (19वें) अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ आपको बहुत-बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनायें उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में रचनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के कार्मिकों ने अपनी मौलिकता से पत्रिका को सुसज्जित किया है। पत्रिका का मुद्रण सर्वोत्तम कोटि का है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर रखें।

भवदीय,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा

Phone : 0141-2385431-39 • Fax : 91-141-2385230 • E-mail : agauRajasthan2@cag.gov.in

---

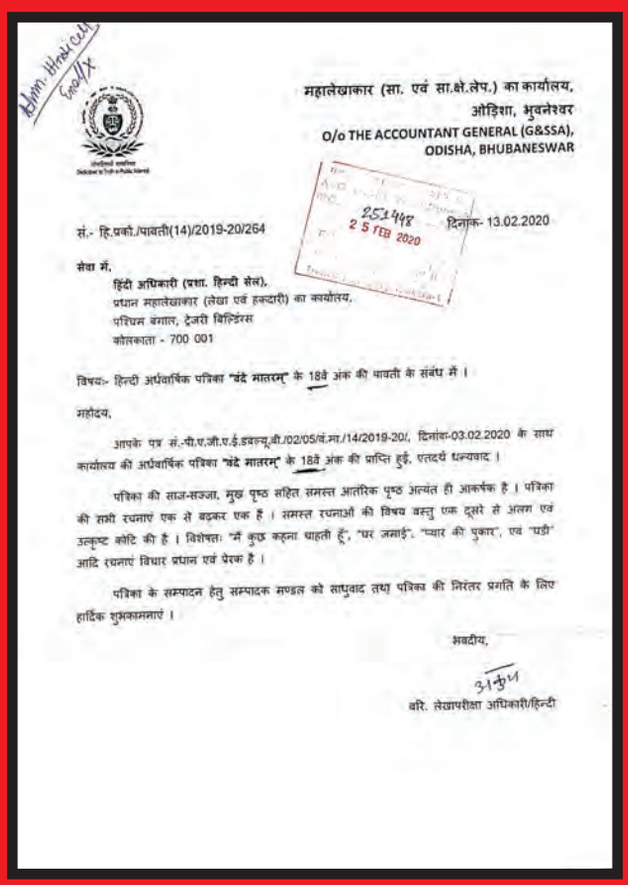

महालेखाकार (सा. एवं सा.क्षे.लेप.) का कार्यालय,

ओड़िशा, भुवनेश्वर

O/o THE ACCOUNTANT GENERAL (G&SSA),

ODISHA, BHUBANESWAR

सं.- हि.प्रको./पावती(14)/2019-20/264 दिनांक- 13.02.2020

सेवा में,
हिंदी अधिकारी (प्रशा. हिन्दी सेल),
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स
कोलकाता - 700 001

विषय:- हिन्दी अर्धवार्षिक पत्रिका **"वंदे मातरम्"** के 18वें अंक की पावती के संबंध में ।

महोदय,

आपके पत्र सं.-पी.ए.जी.ए.ई.डब्ल्यू.बी./02/05/वं.मा./14/2019-20/, दिनांक-03.02.2020 के साथ कार्यालय की अर्धवार्षिक पत्रिका **"वंदे मातरम्"** के 18वें अंक की प्राप्ति हुई, एतदर्थ धन्यवाद ।

पत्रिका की साज-सज्जा, मुख पृष्ठ सहित समस्त आतंरिक पृष्ठ अत्यंत ही आकर्षक है । पत्रिका की सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं । समस्त रचनाओं की विषय वस्तु एक दूसरे से अलग एवं उत्कृष्ट कोटि की है । विशेषतः "मैं कुछ कहना चाहती हूँ", "घर जमाई", "प्यार की पुकार", एवं "घड़ी" आदि रचनाएं विचार प्रधान एवं प्रेरक है ।

पत्रिका के सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

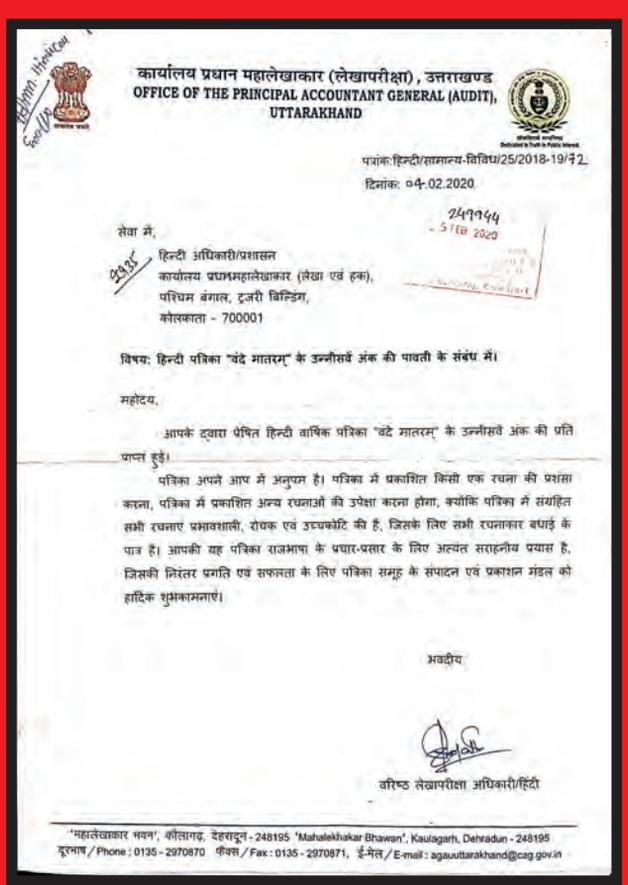

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), UTTARAKHAND

पत्रांक:हिन्दी/सामान्य-विविध/25/2018-19/72

दिनांक: 04.02.2020

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय प्रधानमहालेखाकार (लेखा एवं हक),
पश्चिम बंगाल, ट्रजरी बिल्डिंग,
कोलकाता - 700001

विषय: हिन्दी पत्रिका "वंदे मातरम्" के उन्नीसवें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी वार्षिक पत्रिका "वंदे मातरम्" के उन्नीसवें अंक की प्रति प्राप्त हुई।

पत्रिका अपने आप में अनुपम है। पत्रिका में प्रकाशित किसी एक रचना की प्रशंसा करना, पत्रिका में प्रकाशित अन्य रचनाओं की उपेक्षा करना होगा, क्योंकि पत्रिका में संग्रहित सभी रचनाएं प्रभावशाली, रोचक एवं उच्चकोटि की हैं, जिसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आपकी यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत सराहनीय प्रयास है, जिसकी निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए पत्रिका समूह के संपादन एवं प्रकाशन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

'महालेखाकार भवन', कौलागढ़, देहरादून - 248195 'Mahalekhakar Bhawan', Kaulagarh, Dehradun - 248195
दूरभाष / Phone : 0135 - 2970870 फैक्स / Fax : 0135 - 2970871, ई-मेल / E-mail : agauuttarakhand@cag.gov.in

---

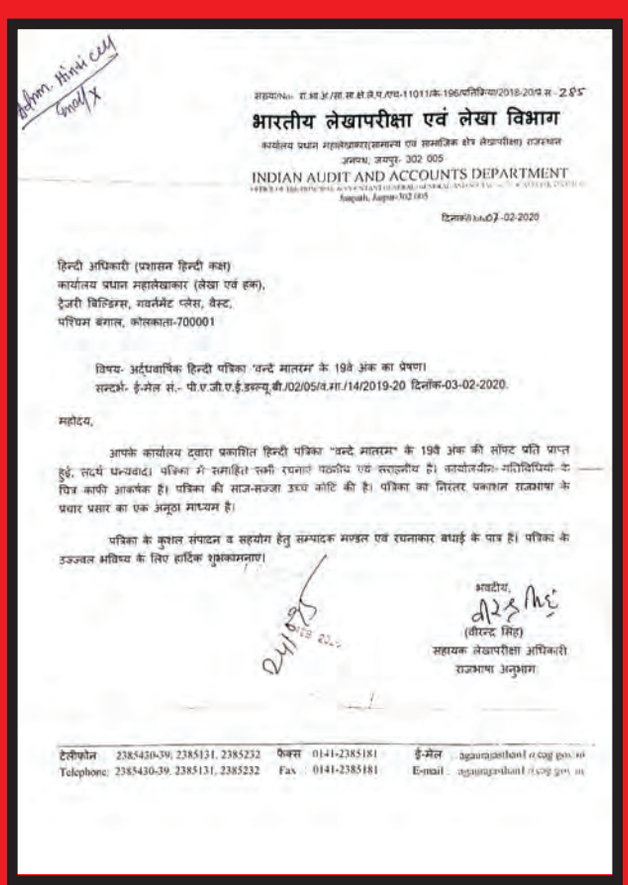

संख्या/No. रा.भा.अ./सा.सा.क्षे.ले.प./एच-11011/के-196/प्रतिक्रिया/2018-20/प.स.- 285

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) राजस्थान

जनपथ, जयपुर- 302 005

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

Janpath, Jaipur-302 005

दिनांक/Date 07-02-2020

हिन्दी अधिकारी (प्रशासन हिन्दी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक),
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, गवर्नमेंट प्लेस, वैस्ट,
पश्चिम बंगाल, कोलकाता-700001

विषय- अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका 'वन्दे मातरम' के 19वे अंक का प्रेषण।
सन्दर्भ- ई-मेल सं.- पी.ए.जी.ए.ई.डब्ल्यू.बी./02/05/व.मा./14/2019-20 दिनॉक-03-02-2020.

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "वन्दे मातरम" के 19वे अंक की सॉफ्ट प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं सराहनीय है। कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र काफी आकर्षक हैं। पत्रिका की साज-सज्जा उच्च कोटि की है। पत्रिका का निरंतर प्रकाशन राजभाषा के प्रचार प्रसार का एक अनूठा माध्यम है।

पत्रिका के कुशल संपादन व सहयोग हेतु सम्पादक मण्डल एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाए।

भवदीय,

(वीरेन्द्र सिंह)
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग

टेलीफोन 2385430-39, 2385131, 2385232 फैक्स 0141-2385181 ई-मेल agaurajasthan1@cag.gov.in
Telephone: 2385430-39, 2385131, 2385232 Fax : 0141-2385181 E-mail : agaurajasthan1@cag.gov.in

---

"आपके स्नेह के हम आभारी हैं कि आपने हमें अपना अभिमत भेजा। पत्रिका के बेहतर भविष्य के लिए इसी प्रकार अपनी राय एवं सुझाव देकर हमारा उचित मार्गदर्शन करते रहें।"

टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।
मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	बैटरी का कुप्रभाव (लेख)	श्री नबेन्दु दाशगुप्त	01
2.	भारत का ऐतिहासिक राज्य- राजस्थान (यात्रा वृतांत)	श्री रेबती रंजन पोद्दार	04
3.	रिश्तों का रूपान्तरण (कहानी)	श्रीमती तापसी आचार्य (बसाक)	08
4.	हिन्दी-अँग्रेजी वार्ता (एकाँकी)	श्री सन्नी कुमार	11
5.	'मांग' एक नारी की (कविता)	श्रीमती अमृता तिवारी	14
6.	श्री अरविंद घोष (लेख)	श्री चन्दन कुमार	16
7.	लकी ब्रेसलेट (कहानी)	सुश्री आरती शर्मा	19
8.	हार पर विजय (कहानी)	श्री अमित कुमार	24
9.	गंगा (कविता)	श्री जितेंद्र शर्मा	28
10.	जीयले भर दुख बा (लेख)	श्री कुन्दन कुमार रविदास	30
11.	संघर्ष (कहानी)	सुश्री अलिषा मौर्या	34
12.	हमारे शहर में जल प्रलय (कहानी)	श्री राजेश कुमार	37
13.	जिजीविषा (कविता)	सुस्मिता सरकार	39
14.	नशा एक अभिशाप (कहानी)	श्री पंकज कुमार गुप्ता	43
15.	वजन पैमाना मशीन (कविता)	श्री सन्नी कुमार	45
16.	जद्दोजेहद (कहानी)	श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह	46
17.	वाक्यांश एवं अभिव्यक्तियाँ	श्री अतुल कुमार	48

हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ

हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ

बैटरी का कुप्रभाव

मानव इतिहास के पन्नों में समय का जो विवरण या जानकारी हमें मिलती है उसे हम कई भागों या शाखाओं में विभाजित करते आ रहे हैं। आज हमारी पृथ्वी की जो स्थिति है या जिस चरण से यह गुजर रही है उसे इलेक्ट्रॉनिक युग कहना गलत नहीं होगा। आज मानव जीवन पग-पग में इलेक्ट्रॉनिक तकनीकी से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बंध गया है। हम आज जो भी कुछ दिन-रात इस्तेमाल कर रहे हैं या करना पड़ रहा है वह ज्यादा से ज्यादा इलेक्ट्रॉनिक तकनीकी से उत्पादित है या सीधा इलेक्ट्रॉनिक सामग्री ही है। इलेक्ट्रॉनिक तकनीकी के बगैर आज हमारी जिन्दगी काफी कठिन हो गई है। आम जिन्दगी से लेकर शिक्षा, चिकित्सा, निर्माण, परिवहन, विनोदन आदि सब कुछ इलेक्ट्रॉनिक हो गया है। आज हमारी जिन्दगी में शायद ही ऐसा कोई कोना मिले जहाँ इलेक्ट्रॉनिक का कोई प्रभाव न हो। इस इलेक्ट्रॉनिक जिन्दगी में इलेक्ट्रोनिक्स के लाभों के साथ इसकी हानियों का सवाल ही यहाँ आलोच्य विषय है।

आज हम सामाजिक जीवन में ऐसे वस्तुओं का इस्तेमाल करते हैं जिसमें इलेक्ट्रॉनिक सामानों की अधिकता होती है। जैसे - घड़ी, रेडियो, मोबाईल फोन, टॉर्च लाईट एवं तरह-तरह के ढेर सारे खिलौने आदि जो कि बैटरी से चलते हैं। ऐसी बैटरी से चलने वाले सामानों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल हो रहा है। इन सबकी बैटरी का एक मुख्य उपादान है सीसा जो कि हमारे पर्यावरण के लिए बहुत ही जहरीला है। यह सब बैटरियाँ जब खत्म हो जाती है तो हम इन्हें यत्र-तत्र फेंक देते हैं। इसका सही डिस्पोजल कम लोग ही जानते हैं। जो नहीं जानते हैं या जो जानते हैं वे लोग भी बैटरियों को जहाँ-तहाँ फेंक देने की लापरवाही करते हैं। इस बैटरी में मौजूद सीसा एवं अन्य केमिकल मिट्टी को जहरीला बना देती है। यह जहरीली मिट्टी जब पानी के संपर्क में आती है तो पानी भी जहरीला बन जाता है। वही जहरीला पानी धीरे-धीरे भूगर्भ में चला जाता है जिसे हम पेय जल के रूप में इस्तेमाल करते हैं। पेड़-पौधे वही जहरीला पानी पीकर जहरीला असर लेकर बड़े होते हैं। अर्थात् हमारी खानपान की सामग्री सब जहरीली बन जाती है जो कि निश्चित रूप से प्राणी कूल के लिए जानलेवा साबित हो रही है।

इसके अलावे और भी ऐसे इलेक्ट्रॉनिक सामान हैं जिसे बिजली से चलाया जाता हैं। जैसे-टीवी, कम्प्युटर, रेफ्रीजरेटर, वाशिंग मशीन, एयरकंडिशनर, म्यूजिक सिस्टम आदि। यह सब सामग्री जिस बिजली से चलती है उसके उत्पादन में जो ईंधन इस्तेमाल होता वह जलने पर वातावरण के वायु व मिट्टी को सीधा प्रदूषित करती है। इन सामग्रियों के ज्यादा इस्तेमाल का मतलब ज्यादा बिजली की खपत एवं ज्यादा प्रदूषण। साथ ही बैटरी के कारखानों से भी बड़े पैमाने पर जहरीला पानी निकलता है जो सिंचाई तथा अन्य कामों में उपयोग आने वाले पानी एवं मिट्टी को भी प्रदूषित करता है।

सुबह जिस घड़ी में समय देखकर हम सभी जगते हैं वह आजकल मुख्यतः इलेक्ट्रॉनिक घड़ी ही है। पहले जैसी

चाभी देनेवाली नहीं हैं। इलेक्ट्रोनिक घड़ी को सचल रखने के लिए 6/8/10 महीने के बाद उसकी बैटरियाँ बदलना पड़ता है। इस्तेमाल की हुई बैटरियाँ को हम ज्यादातर सही जगह पर नहीं फेंकते हैं। यह सब घड़ियाँ जल्द खराब भी होती हैं और 1/2 बार ही रिपेयर होती हैं उसके बाद उसे फेंकना पड़ता है। जबकि चाभी देनेवाली घड़ियाँ बार-बार रिपेयर हो सकती हैं और सचल रखने के लिए भी अलग से कोई सामान की आवश्यकता नही होती है। यह सब घड़ियाँ तो कई जमाने तक सेवारत रहती है (दादा खरीदे पोता पहने जैसा)। इसी तरह इलेक्ट्रोनिक खिलौने ने भी पहले की चाभी देनेवाली खिलौनों को दूर हटा दिया, बदले में आया बैटरी से फैलने वाला प्रदूषण। केवल यही नहीं बच्चे खेलते-खेलते कभी तो बैटरी को निगल जाते हैं जो कि खतरे से खाली नहीं है। अद्यतन खिलौना है, मोबाईल फोन जिसे बच्चों ने नही बडों ने भी अपनाया है। यह फोन तो पहले केवल फोन ही था केवल बातें ही होती थी। अब तो यह ऑल इन वन हो गया है। इसमें खेल खेलों, गाना सुनो, चित्र खींचों देखो ..... । इस तरह के फोन को मल्टीमीडिया फोन कहा जाता है। इस तरह की फोन में बैटरियाँ जल्दी ही खत्म हो जाती हैं जिसके कारण जल्द ही बैटरियाँ बदलनी पड़ती हैं। ज्यादा बैटरियों का इस्तेमाल मतलब ज्यादा प्रदूषण।

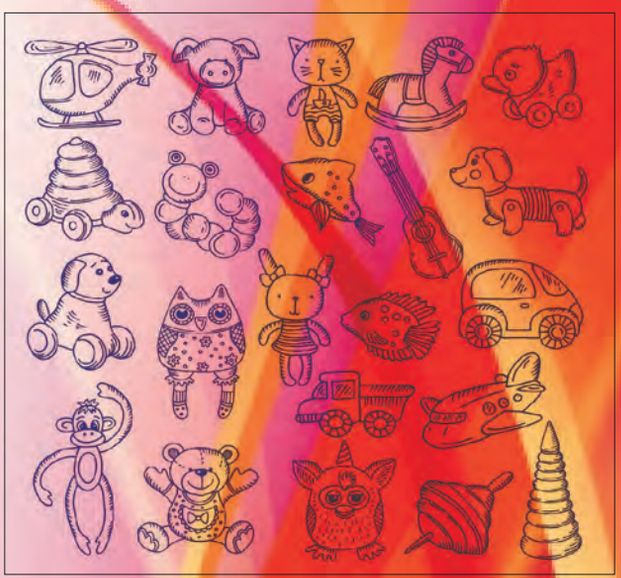

इस बैटरी से चलने वाले सामान तैयार तथा इस्तेमाल करने में हमें कुछ सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है हम ताकि इसके कारण होने वाले प्रदूषण को कम कर सकें। जैसे ज्यादा से ज्यादा रिचार्जेबल बैटरी का प्रयोग करना, खिलौनों आदि में ज्यादा से ज्यादा स्प्रींग का इस्तेमाल करना, खास तौर पर बच्चों के खिलौनों में, चाहे वे थोड़े महंगे ही क्यों न हो। जो भी बैटरी इस्तेमाल हो रही है उसका सही डिस्पोजल के बारे में उपयोगकर्ता को आवश्यक सूचना देना होगा। कहीं-कहीं दुकानों एवं संबंधित कंपनियों के सर्विस केंद्र में एक बॉक्स रखा हुआ मिलता है जिसमें

पुरानी बैटरी डालने के लिए निर्देश रहता है। ऐसा प्रावधान हर विक्रय केंद्र में, जहाँ- जहाँ बैटरी बिकता हो, रखने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। साथ में क्रेता को भी प्रोत्साहित करना होगा कि वे नई बैटरी खरीदते समय पुरानी बैटरी अवश्य लाएँ और उस बॉक्स में डालें। अन्यथा भविष्य में बैटरी नहीं बदली जाएगी। वैसे इकट्ठे किए गए बैटरी को कंपनी या कोई अन्य डिस्पोज़ेबल केंद्र में भेजनी होगी जिनके पास बैटरी को सही डिस्पोज़ करने का प्रावधान हो। कबाड़ीवाले को भी पुरानी बैटरी देना ठीक नहीं है क्यों कि उन लोगों को इसको डिस्पोज़ करने का सही तरीका मालूम नहीं होता है। उपभोक्ता सहित सभी वर्ग के व्यापरियों को इस मामलें में ध्यान देना होगा तभी इस प्रकार के जहर से हम दूर रह पाएँगे।

नबेन्दु दाशगुप्त
सहायक लेखा अधिकारी

भारत का ऐतिहासिक राज्य-राजस्थान

लंबे समय से मुझे भारत के ऐतिहासिक राज्य राजस्थान भ्रमण करने की बहुत उत्सुकता थी। लेकिन भ्रमण करने के लिए अवसर ही नहीं मिल पा रहा था। लेकिन अंततः पिछले दिसम्बर-2019 में मैंने अपने परिवार के साथ राजस्थान भ्रमण करने का कार्यक्रम बनाया।

हमारी जयपुर की यात्रा 21 दिसम्बर, 2019 की सुबह हवाई-जहाज के माध्यम से होने वाली थी। हवाई जहाज के समयानुसार लगभग 12 बजे हमलोग जयपुर पहुँचने वाले थे। मैंने मन ही मन योजना बनाई थी कि दोपहर के खाने के बाद मैं अपने परिवार के साथ यहाँ के कुछ दर्शनीय स्थलों को देखने जाऊँगा। लेकिन जब हम एयरपोर्ट पहुँचे तब हमें मालूम हुआ कि जयपुर जानेवाली फ्लाइट 3-4 घंटे लेट है। मेरी सारी योजना धूमिल होती दिख रही थी। मुझे शक हो रहा था कि कहीं राजस्थान भ्रमण के दौरान भी मुझे इस तरह की देरी का सामना न करना पड़ जाए।

विलंब होने के कारण हमलोग लगभग शाम 4 बजे जयपुर पहुँचे और शाम के 5 बजे हमने खाना खाया। उस दिन जयपुर में किसी भी स्थल को देखने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ।

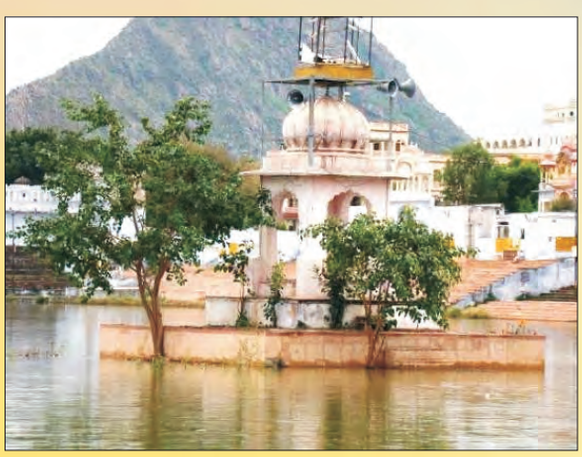

अगले दिन हमलोग जयपुर से हिंदुओं के प्रसिद्ध पवित्र कुंड "पुष्कर" के लिए कूच कर गए। वहाँ पहुँचकर हमलोगों ने सर्वप्रथम ब्रह्मा मंदिर के दर्शन किए। यह काफी दर्शनीय मंदिर था। हम सभी ने वहाँ पूजा-अर्चना की और मंदिर में लगभग एक घंटा समय भी व्यतीत किया। तत्पश्चात, हमलोग पुष्कर कुंड की भव्यता एवं इसकी सुंदरता से रूबरू हुए और अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए यहाँ पूजा भी किया। ऐसा माना जाता है कि यह पवित्र कुंड सभी की मनोकामनाएँ पूरी करता है। कुंड के किनारे बहुत सारे तीर्थयात्री अपने पूर्वजों के नाम पर पूजा-अर्चना कर रहे थे। यह दृश्य काफी आत्मीय था। दोपहर का भोजन ग्रहण करने के बाद हमलोग अजमेर शरीफ घूमने गए। यह भी एक मनोरम पवित्र स्थल प्रतीत हुआ। इस दरगाह का दर्शन करके कोई भी इंसान प्रसन्नचित हो जाएगा। हमलोग लगभग रात के 9 बजे जयपुर वापस लौट आएँ।

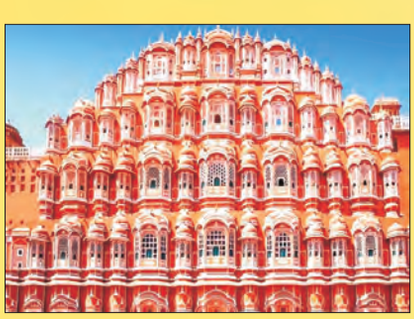

तीसरे दिन हम सभी ने जयपुर शहर के प्रसिद्ध स्थलों जैसे- 'सिटी पैलेस', 'जंतर-मंतर', 'हवा महल', 'जल महल' आदि का भ्रमण किया। प्रत्येक स्थल की अपनी-अपनी स्थापत्य तथा ऐतिहासिक महत्व संबंधी विशेषताएँ थी। इन सभी की निर्माण संबंधी योजना की गणना मेरे मस्तिष्क में चल रही थी। इन भवनों का हर कोना इस तरह से निर्मित था कि इसे देखकर कोई भी स्तब्ध रह

जाए। इसके बाद हम सभी होटल पहुँचकर खाना खाने के बाद बीकानेर की ओर रवाना हुए।

पाँच घंटे के लम्बे सफर के बाद, हम सब रात के 10 बजे बीकानेर पहुँच गए। वहाँ काफी ठंड थी। रात का खाना खाकर हम सोने चले गए। अगली सुबह हम सभी बीकानेर स्थित 'चूहों का मंदिर' देखने निकल गए। मंदिर विभिन्न आकार वाले चूहों से भरा पड़ा था। वहाँ उपस्थित सभी लोग चूहों को खिलाने के लिए भोजन खरीद रहे थे तथा उसे मंदिर में रख रहे थे। हैरान करने वाली बात यह थी कि चूहें भी उस भोजन को ग्रहण कर रहे थे। मैंने अपने जीवन में इस तरह का मंदिर पहले कभी नहीं देखा था। आज इस तरह के मंदिर को देखकर मैं काफी हैरान हो गया। उसके बाद हमने एक किले का दर्शन किया तथा तत्पश्चात जैसलमेर की ओर चल दिये। हमलोग रात 9 बजे जैसलमेर पहुँच गए थे। रात में होटल जाते वक़्त हमारी नजर प्रसिद्ध गोल्डेन फोर्ट पर पड़ी। इसे देखते ही मन प्रफुल्लित हो उठा, जिस किले के बारे में हम सुना या पढ़ा करते थे अब वह हमारे प्रत्यक्ष खड़ा था।

हमलोगों ने बहुत ही सुंदर 'नीरज' नामक एक होटल में रात व्यतीत किया जो गोल्डेन फोर्ट के एकदम सामने था। उस रात मैंने खुद को काफी भाग्यशाली समझा क्योंकि मुझे उस रात होटल के छत पर खड़ा होकर घंटों गोल्डेन फोर्ट को निहारने का मौका मिला था। बिना देखे इस किले की सुंदरता का अंदाजा कोई नहीं लगा सकता है। अगले दिन हमलोगों ने किले के अंदर लगभग तीन घंटे बिताएँ तथा किले के चप्पे-चप्पे का मुआयना किया। हमने 'राज दरबार', 'रानी का शयन-कक्ष', 'शस्त्र-भंडार' आदि का अवलोकन किया। किले के अंदर इतना जगह था मानों इसमें एक शहर समाहित हो जाए। यह बहुत ही विचित्र लगता है कि 5-6 सौ वर्ष पूर्व इस तरह के किले की योजना एवं निर्माण संभव कैसे हुआ होगा। मुझे उस वक़्त गर्व महसूस हुआ जब मैंने राजस्थानी गाइड से यह कहते हुए सुना कि एक प्रसिद्ध बांग्ला लेखक तथा एक निदेशक द्वारा इस किले पर आधारित एक जासूसी फिल्म भी निर्मित की गई है।

जैसलमेर में हमने एक और स्थल से अपनी आँखों को आकर्षित होने का मौका दिया वह था गोल्डेन फोर्ट के समीप स्थित 'पटवों की हवेली'। इसकी निर्माण पद्धति भी अविस्मरणीय थी एवं इसकी व्याख्या करना अत्यंत कठिन है। इसको प्रत्यक्ष रूप से अपनी आँखों से साक्षात्कार कराने के उपरांत ही इसकी सुंदरता का अनुभव किया जा सकता है। दोपहर का खाना खाने के बाद, हमलोग राजस्थान के एक मुख्य आकर्षण जो मरुस्थल है की सैर को निकल पड़ें। हम श्याम नामक मरुस्थल आ पहुंचे थे। वहाँ चारों ओर रेत ही रेत फैली थी। मरुस्थल में प्रवेश कर ऊँट की सवारी नहीं करना खाने में नमक ना होने जैसा है। इसलिए हम इस मौके को कैसे जाने देते। हमलोगों ने लगभग डेढ़ घंटों तक ऊँट की सवारी की। रेत में ऊँट की सवारी करना अत्यंत मनोरम लगा। हमें उस समय राजस्थानी होने का अनुभव भी हुआ। सवारी के दौरान, हमने रेत की उतार-चढ़ाव के दृश्यों का भी आनंद उठाया। उसके पश्चात हमने राजस्थानी लोकनृत्य

एवं संगीत का मजा लिया। रात को वापस होटल आ गए एवं रात्रि स्वप्न में इन्ही किलों और रेतों में खुद को खोया हुआ पाया।

अगली सुबह हमने फिर नए सफर का आगाज किया जिसकी मंजिल थी जोधपुर। यात्रा के आरंभ में मन तरो ताजा था लेकिन मंजिल तक पहुँचने में दोपहर हो गई और अंततः हम जोधपुर किला पहुँच गए जिसे 'मेहरानगढ़ का किला' के नाम से भी जाना जाता है। यह बहुत बड़ा किला था। किले के अंदर प्रवेश करने के बाद लंबी यात्रा से बोझिल हुए मन को एक दैविक स्फूर्ति का एहसास हुआ। हमने किले के हर तल्ले की सैर की और पाया कि हर तल्ले पर विभिन्नताएँ व्याप्त हैं जो काफी मनमोहक हैं। किले की सुंदरता में इस कदर खो गए कि शाम हो गई और पता भी नहीं चला। किले से बाहर निकलकर जब एक नजर उस पर पड़ी तो मानो ऐसा लगा कि जिस प्रकार खाने के बाद कुछ मीठा मिल जाता है तो तन-मन संतुष्ट हो जाता है ठीक उसी प्रकार के मीठे अनुभव से परिचित हो गया। सूर्यास्त का समय था और किले के पीछे से सूर्य का नजारा मंत्रमुग्ध करने वाला था। लगभग 600 वर्ष बाद भी यह किला खड़ा है तथा अपने सौन्दर्य के आकर्षण से भारतीय एवं अन्य देशों के सैलानियों को अपनी ओर खींचता है। अगले दिन हमने जोधपुर स्थित उम्मैद भवन का दीदार किया और फिर नए जोश के साथ हमारा कारवाँ माउंट आबू की तरफ चल दिया।

राजस्थान का एक और भ्रमण करने योग्य प्रसिद्ध स्थल है माउंट आबू। यह एक पहाड़ी इलाका है। हमलोग यहाँ रात 8 बजे पहुँच गए थे। जैसे-जैसे हमलोग उस इलाके में प्रवेश कर रहे थे वैसे-वैसे आश्चर्यचकित करने वाले नजारों का तांता बंधता गया। दूसरे शहर जैसी इस पहाड़ी इलाके में भी स्कूल, बाजार, होटल आदि सुविधाएं उपलब्ध थी। वहाँ पहुँचते ही हम ठंड से ठिठुरने लगें। गरम कपड़े पहनने के बावजूद भी बाहर खड़ा होना मुश्किल हो रहा था। कुछ देर बाद मालूम पड़ा कि उस वक़्त वहाँ तापमान 2-3 डिग्री था और मध्य रात्रि तक तापमान गिर कर माइनस डिग्री हो जाएगा। होटल में नींद पूरी करने के बाद सुबह चाय की चुस्की ले रहा था तभी खिड़की से बाहर देखता हूँ कि पूरे इलाके में बर्फ की चादर फैली हुई है। इस दृश्य को देखकर मेरी चाय मुझे ठंडी लगने लगी। हमलोग अगले दिन उस इलाके में सैर करने निकलें। मुझे 'दिलवाड़ा मंदिर' अत्यधिक मनभावन लगा और यह जैन मंदिर शत प्रतिशत संगमरमर से निर्मित है। इस मंदिर का प्रत्येक भाग उत्कृष्ट कला का उदाहरण है तथा किसी को आकर्षित करना मानो इसकी प्रकृति है। लगभग छह सौ वर्ष पहले इसका निर्माण किया गया था और जिस योजनाबद्ध तरीके से इसमें सुंदरता पिरोई गई वो कल्पना से परे है। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह राजस्थान का सबसे सुंदर मंदिर है जहाँ बिताए गए हर क्षण एक सुखद अनुभूति का एहसास दिलाती है। यहाँ भ्रमण करने के उपरांत जलपान एवं कुछ खरीदारी करने के बाद हमलोग 'नक्की झील' के तरफ चल दिये। हमने दोपहर में झील का आनंद लिया। झील काफी मनमोहक थी। यह चारों ओर से पर्वतों से घिरी हुई थी। झील का पानी बहुत ही साफ था तथा इसमें कुछ नौकाएँ भी चल रही थी और कुछ हंसों के समूह भी उपस्थित थे जिसके कारण झील की खूबसूरती में चार-चाँद लग गई थी। हमलोग भी कुछ अल्पाहार लेकर नौका पर सवार हुए तथा झील का आनंद उठाया। हमलोग होटल वापस लौट आएँ तथा भोजन करने के बाद उदयपुर के लिए कूच कर गए।

हमलोगों को उदयपुर पहुँचने में शाम हो गई थी। होटल में फ्रेश होने के बाद हमलोग रात्रि में ही उदयपुर की सड़कों पर उतर गए। अगले दिन हमने उदयपुर की कुछ प्रसिद्ध स्थलों के भ्रमण के साथ-साथ उदयपुर शहर में स्थित महल के भी दर्शन किए। महल की वास्तु-कला योजनाबद्ध तरीके से निर्मित थी। वास्तव में यह राजमहल महाराजा उदय

सिंह का है, जिन्होनें अपना साम्राज्य चित्तौड़ से उदयपुर स्थानांतरित किया था। वहाँ एक संग्रहालय भी मौजूद है जिसमें बड़ी मात्रा में ऐतिहासिक वस्तुएँ सरंक्षित कर सुसज्जित ढंग से रखी हुई है।

अगले दिन हमलोग जयपुर के लिए प्रस्थान कर गए जहाँ से हमने राजस्थान भ्रमण करने की शुरुआत की थी लेकिन 'चित्तौड़गढ़' के रास्ते। हमने देखा कि पहाड़ के ऊपर एक किले का निर्माण किया गया है जो बहुत बड़े क्षेत्रफल में फैला हुआ है। हम भली-भांति अवगत हैं कि इसी किले की रक्षा करने के क्रम में 'वीर महाराणा प्रताप सिंह' ने अपने प्राण न्योछावर किए थे। इस किले की मुख्य संरचना का कुछ भाग कई वर्ष पहले ही टूट चूका था। लेकिन कुछ-कुछ महत्वपूर्ण स्थल आज भी सुरक्षित हैं, जैसे – भगवान कृष्ण का मंदिर जहाँ मीराबाई उनकी आराधना किया करती थी, जलाशय तथा रानियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले स्नानागार का मार्ग जो भूमिगत सीढ़ियों के माध्यम से जुड़ी हुई थी। हमलोगों ने महल के उस हिस्से का भी दर्शन किए जहाँ रानी पद्मावती ग्रीष्म ऋतु एवं अन्य ऋतुओं में रहा करती थी। उस किले की निर्माण योजना अति बौद्धिक रूप से की गयी थी जिसका अनुभव करना हमलोगों के लिए अद्वितीय रहा। महल के अंदर पुरुषों एवं महिलाओं के रहने के लिए ऐसी व्यवस्था की गई थी कि वे एक दूसरे को कभी दिखलाई नहीं पड़ते होंगे। हमने किले में अच्छा समय बिताया तथा वह पल निसंदेह ही आनंदमयी था। किले की सैर करने के बाद 30 दिसम्बर 2019 की रात 11:55 के करीब हमलोग जयपुर पहुँच गए थे। तथा दिनांक 31 दिसम्बर 2019 को हवाई मार्ग से हम सपरिवार कोलकाता वापस आ गए। यह यात्रा इतनी रोचक थी कि हम सभी का मन प्रसन्नता से ओत-प्रोत हो गया। मैं यही कहना चाहूँगा कि आप सभी को भी राजस्थान की सैर अवश्य करनी चाहिए।

रेबती रंजन पोद्दार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

रिश्तों का रूपान्तरण

मोहनपुर गाँव में राय वंश एक धनी और इज्जतदार परिवार के नाम से जाना जाता था। तालाब, बगीचा और आँगन से घिरा हुआ एक बड़ा सा मकान हमेशा लोगों के चहल पहल से भरा रहता था। परिवार में किसी का विवाह होने पर सारे गाँव को आमंत्रित किया जाता था। कोलकाता के बड़ाबाज़ार में उनलोगों की मसाले की दुकान थी। लेकिन यह सब बड़ाबाबू नवीन राय के समय तक की बात थी। उनके चार लड़के थे। नवीन राय के देहांत के बाद ही चारों भाइयों में लड़ाई छिड़ गयी। व्यवसाय भी डूबने लगा और साथ में बंटवारा। चारों भाइयों में से तीन तो अपना अपना व्यापार अलग तरीके से चलाने लगे, लेकिन मंझला भाई देवी प्रसाद शुरू से ही भोलाभाला और उदासीन प्रवृत्ति का था। तीनों भाइयों ने षड्यंत्र के जरिये कुछ रुपये देकर उसे अपने पारिवारिक व्यापार से निकाल दिया और मकान के बाहर दो कमरे, आँगन और रास्ते के पास कुछ ज़मीन देकर परिवार से भी अलग कर दिया। देवी प्रसाद की पत्नी हरिमती बहुत रोयी अपने पति को समझाने की कोशिश भी की उनको भी एक बेटा और एक बेटी है – "वे कहाँ जाएँगे? कैसे उनका पालन पोषण होगा।" लेकिन स्त्री का कहाँ कौन सुनता है। नकद पैसे मिलते ही देवीप्रसाद खुश हो गया था। आलसी बनकर बिना कामकाज करके उसी पैसे से वे घर चलाने लगे। इसी बीच बेटी भी बड़ी हो गयी थी और उनकी शादी भी करानी थी। पासवाले गाँव में एक लड़का था जो कोलकाता स्थित एक निजी संस्था में काम करता था। उसी से अपनी बेटी की शादी तय की। शादी बड़ी धूमधाम से हुई। परिवार की इज्ज़त का सवाल जो था। बेटी गयी ससुराल, लेकिन दो सालों के अंदर एक घातक बीमारी से बेटी की मौत हो गयी। हरिमती टूट पड़ी।

इधर भाई से प्राप्त धन तो एक दिन खत्म होना ही था। एकमात्र पुत्र रतन प्रसाद पढ़ाई लिखाई छोड़कर इधर उधर घूमने लगा। कभी छोटा मोटा काम शुरू किया। फिर मन हुआ तो घर में बैठ गया। वह भी पिता की तरह आलसी और कम बुद्धिमान था। इस तरह दिन गुजरते गुजरते रतन की उम्र चालीस की हो गयी। कोई काम-काज न करने के कारण हरिमती उसकी शादी की बात भी नहीं चला पा रही थी। अब तो घर चलाना भी मुश्किल की बात हो गयी थी। रतन कभी कुछ खरीद कर लाता तो कुछ सब्जी बन जाती। कभी कभी केवल चावल उबालकर ही पेट भरना पड़ता था। देवीप्रसाद की उम्र भी ज्यादा हो गयी थी और कई प्रकार की बीमारियों ने उन्हें घेर लिया था। नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र से मिली दवा से उनका इलाज चलता था। हरिमती खुद से बहुत कोशिश करती थी। कभी अनाज उगाती थी तो कभी अगरबत्ती के पैकेट बनाने का काम किया करती थी तो कभी दूसरे घरों में चावल पीसने का काम करती थी। वास्तव में पिता पुत्र के आगे खाना परोसने का काम आखिर उसके ही माथे होता था।

कुछ दिनों से हरिमती ध्यान दे रही थी कि रतन कुछ सोच में डूबा रहता है। दिनभर गुमसुम रहता था। घर, आँगन और बाहर खाली जमीन पर जहां हरिमती मूली, पालक, मिर्च, टमाटर का पौधा लगाती थी वहीं घूमता रहता था। पूछने पर कुछ बताता नहीं था। अचानक लड़के के इस व्यवहार से हरिमती भी सोच में पड़ गयी थी।

फिर अचानक से एक दिन हरिमती को पता चला कि उसका पुत्र ब्याह करके बहू घर लाने वाला है। हरिमती

सकते में आ गयी उसने ये बात अपने पति देवीप्रसाद को बताई। उसे इस बात की चिंता थी कि परिवार के एक सदस्य बढ़ जाने से उसके लिए खान-पान, रहन-सहन आदि की व्यवस्था वे लोग कैसे कर पाएंगे? हरिमती बहू की स्वागत की तैयारियों में जुट गयी।

लेकिन यह सब करने का ज्यादा समय हरिमती को नहीं मिला और अगले ही दिन रतन प्रसाद अपने पत्नी और एक आदमी ठेले पर सामान लेकर घर के सामने आ धमका। चावल, दाल, अनाज, मिठाइयाँ, फल, कपड़े की गठरी आदि से ठेला भरा पड़ा था। हरिमती ने अपने पुत्र से पूछा, 'पैदल? एक रिक्शा भी नहीं जुटा पाये?' रतन ने कहा, 'ठीक है! कोई बात नहीं। माँ, यह तुम्हारी बहू रूपाली है और यह विशु है, इनके पिता।' इसके बाद हरिमती ने बहू के स्वागत की रस्में अदा की और नयी बहू का गृह प्रवेश कराया।

बहू का नाम रूपाली था पर विडम्बना थी कि वह रूपवती नहीं थी। पर काम काज के मामले में वो काफी अच्छी थी। अपने मायके से लाये हुए सामान से उसने घर को अच्छी तरह से सजा दिया। बहुत ही जल्द वो इस परिवार का हिस्सा बन गयी।

हफ्ते भर बाद रतन और रूपाली ज़मीन के सामने वाले हिस्से में सफाई कर रहे थे। हरिमती ने कुछ नहीं पूछा। रूपाली ने अपने मायके से बाँस-बल्ली, प्लास्टिक आदि मँगवा ली थी। उनलोगों ने मिलकर सामने वाले हिस्से को एक दुकान की शक्ल दे दी। ज़मीन के आगे एक सड़क थी जो स्टेशन तक जाती थी जिससे राहगीरों से ये इलाका हमेशा भरा रहता था। रतन और रूपाली ने मिलकर होटल चलाने की सोची। देखते ही देखते खाने बनाने के बर्तन, साक-सब्जी अनाज से उन्होंने दुकान को भर दिया। कुछ ही दिनों में वह किस्म किस्म के गरमागरम खाना बनाने लगा। इस होटल के बन जाने से राहगीरो को काफी सुविधा हुई। हरिमती भी दोपहर को घर के काम से निजात पाने के बाद होटल के अन्य कामो में मदद करने लगी। सभी की कड़ी मेहनत से धीरे धीरे यह व्यवसाय जमने लगा।

हर महीने रूपाली घर खर्च के लिए रुपये भी हरिमती को देने लगी। सब कुछ ठीक चल रहा था। रूपाली ने अपने व्यवहार से सभी का दिल जीत लिया था। एक दिन हरिमती ने रूपाली से पूछा, 'उम्र कितनी है तुम्हारी?' रूपाली ने कहा, 'चौबीस-पच्चीस साल।' 'तो फिर मेरे चालीस साल के बेटे से क्यूँ शादी की?' रूपाली ने जवाब दिया, 'कॉंट्रैक्ट माँ कॉंट्रैक्ट, यह शादी सिर्फ एक समझौता है।' इतना सुन कर हरिमती चुप हो गयी।

दिन बीतते गए, धीरे धीरे घर में खुशियाँ फैलने लगी। घर और होटल के संभालने में दिन कैसे बीतता था पता ही नहीं चलता। होटल का व्यवसाय भी काफी चमक गया था। हरिमती और रूपाली अक्सर बर्तन धोने के लिए तालाब किनारे जाते थे, ऐसे ही किसी दिन हरिमती ने मौका देखकर रूपाली से पूछा, 'तुम्हें रतन पसंद तो है ना?' रूपाली ने

जवाब दिया, 'मेरी शादी में पसंद-नापसंद की तो कोई बात ही नहीं थी। मेरी माँ गुज़री तब मैं पंद्रह साल की थी, उसके बाद पिता की हालत पागलों जैसी हो गयी। अक्सर शराब के नशे में धूत होकर घर आते थे, मेरी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। मैं पढ़ना-लिखना चाहती थी, पर सब छोड़ना पड़ा। इन सब के अलावा गाँव के लड़के मुझे गलत निगाहों से देखने लगे थे। एक दिन गाँव के पंडित से मुलाक़ात हुई और आपके बेटे के बारे में पता चला। मुझे सिर्फ एक परिवार चाहिए था माँ जिसे मैं अपना कह सकूँ। मुझे पता लगा कि आपलोगों के पास अपनी ज़मीन है, सर के ऊपर छत है। ये सब सोचकर मैंने पंडित के माध्यम से शादी का प्रस्ताव आपके बेटे के सामने रखा और ये भी बताया की अगर वो मुझे स्त्री की मर्यादा दे तो मैं उसके रोटी दाल का व्यवस्था करूंगी, इसीलिए मैंने उस दिन यह कहा था कि यह शादी सिर्फ एक कॉंट्रैक्ट है, समझौता है।'

काफी देर से एक कोयल तालाब के दूसरी ओर कूक रही थी। तालाब के स्वच्छ पानी में पेड़ों के शाखा के हिलने की परछाई पड़ रही थी। रूपाली ने अपने मन को पूरी तरह हरिमती के सामने रख दिया था। उसने फिर कहा, 'माँ, यहाँ आकर मुझे जो मिलना था वह मुझे मिल गया है, पर यहाँ मुझे एक और अनमोल चीज़ प्राप्त हुई है जो हो तुम। मेरी इस जंग में तुमने मेरा भरपूर साथ दिया, कदम-कदम पर मेरी मदद की। तुमसे मुझे जो प्यार मिला वो एक माँ अपनी बेटी को ही दे सकती है, तुम जैसी माँ का बेटा कभी मुझे धोखा नहीं दे सकता, मुझे इस बात का यकीन है। तुम मेरी परम प्राप्ति हो।' इतना सुनकर हरिमती ने रूपाली को अपने बाहों में भर लिया। सास-बहू के इस संबंध का माँ-बेटी के रिश्ते में रूपान्तरण से कोयल की कूक और भी मीठी लगने लगी।

तापसी आचार्य बसाक
सहायक लेखा अधिकारी

हिन्दी-अँग्रेजी वार्ता

वक्ता- भारत में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। राजभाषा होने के बावजूद भी बढ़ावा देने जैसे कार्यक्रम का आयोजन होने से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि अभी भी राजभाषा हिन्दी को पूरी तरह से उपयोग में नहीं लाया गया है। सरकारी एवं प्राइवेट नौकरी के लिए होनेवाली प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी भाषा से अधिक अँग्रेजी भाषा के ही प्रश्न पूछे जाते हैं। इस वजह से भी हिन्दी से ज्यादा अँग्रेजी को सीखने-पढ़ने की होड़ लगी है। फलतः हिन्दी पिछड़ती जा रही है। इससे संबन्धित हिन्दी एवं अँग्रेजी के मध्य एक व्यंग्यात्मक वार्ता पर नजर डालते हैं।

अँग्रेजी : हैलो हिन्दी ब्रो, हाउ आर यू ?

हिन्दी : मैं ठीक-ठाक हूँ भाई, आशा है आप भी बढ़ियाँ होंगे।

अँग्रेजी : यस, आई एम क्वाइट कूल ब्रो। व्हाट इज योर प्लान टुडे ?

हिन्दी : कुछ खास नहीं, एक-दो जगह मुझे बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। बस उसी तरफ ध्यान केंद्रित है।

अँग्रेजी : हाउ लकी मैन। यू एंजॉय लोट्स ऑफ पार्टीज।

हिन्दी : यही तो विडम्बना है। मुझे बढ़ाने के नाम पर पार्टियों का आयोजन किया जाता है। आपका ही ठीक है, आप इतने बढ़ चुके हो कि अपने देश से फल-फूलकर कितने देशों में व्याप्त हो चुके हो। मैं तो अपने देश में ही कहता फिर रहा कि हिन्दी का उपयोग करें, हिन्दी में कार्य करें आदि-आदि।

अँग्रेजी : दिस इज क्वाइट टू। बट लूक आई एम वेल बिहेव्ड देट्स वाय पीपल लाइक मी, ब्रो।

हिन्दी : आपकी भाषा में व्यवहार कहीं नहीं दिखता और आप खुद को वेल बिहेव्ड कहते हो। आप बड़े-छोटे को एक समान यू कह कर पुकारते हो। जबकि मैं बड़े-छोटे को पुकारते समय में उनका ख्याल रखता हूँ। शिष्टाचार व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्दों की कमी नहीं है।

अँग्रेजी : (चिढ़ते हुए) लीव ब्रो। लैंगवेज़ इज यूज्ड टू एक्सप्रेस विउज एंड आइ एम बेस्ट इन इट।

हिन्दी : हाँ। आपने सही कहा भाषा हमारे मन के विचारों को प्रकट करने का साधन है। परंतु इसमें अँग्रेजी सबसे अग्रणी है, मैं इस बात को नहीं मानता। आपको भली भाँति ज्ञात होगा कि दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक भाषा हिन्दी है। इसका कारण है कि मैं लिपि के अनुसार चलता हूँ। मुझे जैसा लिखा जाता है वैसा ही बोला-पढ़ा जाता है। और आपकी तो बात ही निराली है- chemistry ओर cherry को देख लें कभी आप "क" का उच्चारण करते हैं तो कभी "च" का। ऐसे कितने उदाहरण हैं जो आपकी श्रेष्ठता को दर्शाता है।

अँग्रेजी : यस आई नो। आई हैड बोर्रोड मेनी वर्ड्स फ्रोम डिफ़्रेंट-डिफ़्रेंट कंट्रीज एंड मेलटेड दीज़ वर्ड्स इन मी।

हिन्दी : भाई आपने कई देशों के शब्द लेकर खुद को एक भाषा नहीं बल्कि एक मिश्रण का निर्माण किया है। आपमें आपकी देश की खुशबू की कमी है। किसी ने सही ही कहा है "अँग्रेजी मूर्खों की भाषा है।"

अँग्रेजी : (आग बबूला होकर) आई डू नॉट बिलिव इट। आई एम ए मिक्सचर देन व्हाट अबाउट यू।

हिन्दी : भाई मेरा इतिहास और निर्माण सब मेरी मिट्टी से संबन्धित है। मैं अपने देश की आम बोल चाल की भाषा हूँ। अंग्रेजों ने हमारे देश पर काफी लंबे समय तक राज किया था इस वजह से ही आप यहाँ मौजूद हो वरना मुझे अपने ही देश में खुद को बढ़ावा देने के लिए किसी के द्वारा बाधित नहीं होना पड़ता।

अँग्रेजी : (हँसते हुए) वी वर पावरफूल। इंग्लिश इज पावरफूल। सो, इवेन टूडे यू आर स्लेव ऑफ माईलैंगवेज़।

हिन्दी : यह तो बिलकुल सच है, भाई। लेकिन जिस तरह से अँग्रेजी बोलने वाले अंग्रेजों को भगाया गया ठीक उसी भाँति आपका भी पतन अवश्य होगा। मैं राजभाषा हूँ। आज मुझे आपके ऊपर लिखा जाता है ओर आपसे मेरा कद भी बड़ा होता है। निकट भविष्य में अँग्रेजी भारतवर्ष में मात्र एक भाषा तक ही सीमित रह जाएगी। जन की बोलने एवं लिखने वाली भाषा केवल हिन्दी ही होगी। हमारे देशवासियों को थोड़ा प्रण तथा हिम्मत के साथ इसे अपना मानकर बढ़ाने की जरूरत है।

अँग्रेजी : यू नो डियर, इंडिया वाज ए गोल्डेन बर्ड। आवर पीपल लूटेड एंड टेम्ड इट। यू आर सीइंग इट्स इंपैक्ट। इवेन टूडे यू स्लेव पीपल आर स्टील यूजिंग माईलैंगवेज़। हाहा हाहा (हँसने की आवाज)।

हिन्दी : भाई मुझे अँग्रेजी भाषा से कोई बैर नहीं है। मैं मानता हूँ आज भी हम सभी आपके भाषायी गुलाम हैं। जहाँ बात सोने की चिड़ियाँ यानि हमारे देश की आती है तो मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आपकी भाषायी गुलामी अब चंद साल ही चलने वाली है। आपका प्रभाव लंबा जरूर है पर अनंत नहीं। यह सोने कि चिड़ियाँ अब अपने भाषा में चहकने को तैयार है। आप को पहले भी तिरस्कृत करके निकाला गया था और इस गुलामी से भी हम जल्द ही बाहर निकल जाएंगे।

वक्ता : राजभाषा का विकास कितना हुआ है ओर कितना होना चाहिए, इससे हम भलीभाँति परिचित हैं। विद्यालयी शिक्षा एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में अँग्रेजी को हिन्दी से अधिक मान्यता देने के कारण हिन्दी का आधार स्तम्भ ही कमजोर हो रहा है। जब नींव में ही घुसपैठ हो तो जिस विकास की कल्पना हम सभी कर रहे हैं, वह संभव होता नहीं दिखाई दे रहा है। हिन्दी का उपयोग करने में कनिष्ठ और अँग्रेजी का उपयोग करने में खुद को वरिष्ठ एवं अग्रणी के भाव से मुक्त होकर ही राजभाषा का प्रभावी विकास संभव हो पाएगा। आपसे सवाल है- क्या आपको हिन्दी नहीं आती, क्या आप इसे नहीं बोल सकते? आदि आदि इसका जवाब आप अपने हृदय से पूछें। मैं इतना कहूँगा जितना हिन्दी आपको पता है उतनी से ही शुरुआत कीजिए, त्रुटियों से भयभीत न हों। बाकी आप सभी जानते हैं आप जितना इसका प्रयोग कीजिएगा आपकी हिन्दी उतनी ही सुदृढ़ होगी।

सन्नी कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

‘मांग’ एक नारी की

आधी आबादी का अधिकार माँगती हूँ,
नारियों से न्यायोचित व्यवहार माँगती हूँ।
माताओं – बहनों पर कुदृष्टि डालते हैं
ऐसे कुकर्मियों का संहार माँगती हूँ।।

नारियाँ सुरक्षित हों, ऐसा संसार माँगती हूँ,
जीवन भयशून्य रहे ऐसा आगार माँगती हूँ।
हर नारी सशक्त हो पाए, ऐसा उपचार माँगती हूँ,
दुष्टों का मर्दन कर पाए, औज़ार माँगती हूँ।
वह धनुष बाण संधान करे, टंकार माँगती हूँ ,
दृग की अग्नि से भस्म करे, अंगार माँगती हूँ।

अब उठो नारियों यत्न करो,
खप्परवाली का रूप धरो।
है रक्तबीज अनगिनत खड़े,
खप्पर में इनका रुधिर भरो।।

अब भाव में बहना छोड़ो,
डर – डर कर के रहना छोड़ो।
तुम अबला हो कहना छोड़ो,
यह दुराचार सहना छोड़ो।।

तुम सीता का सम्मान यदि,
उस मान की रक्षक राम तुम्हीं।
तुम पांचाली का चीर यदि,
उस लाज की रक्षक श्याम तुम्हीं।

जिसके कृपाण से काल डरे,
वह लक्ष्मीबाई रानी तुम।
जिसके जौहर से महि डोले,
वह पद्मावती महारानी तुम।।

सीने में साहस का अंबार माँगती हूँ
तुमसे नरमुंडों का श्रृंगार माँगती हूँ।
आधी आबादी का अधिकार माँगती हूँ,
नारियों से न्यायोचित व्यवहार माँगती हूँ।।

अमृता तिवारी
लेखाकार

श्री अरविंद घोष

बंगाल में जन्में मनीषियों, युगपुरुषों एवं स्वतन्त्रता सेनानियों में एक विशिष्ट नाम है – श्री अरविंद घोष। बांग्ला भाषा में उच्चारण के प्रभाव से कहीं कहीं उनका नाम 'अरोविंदो' लिखा देखने को भी मिलता है। श्री अरविंद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे दार्शनिक, चिंतक, कवि, आध्यात्मिक पुरुष, योगी एवं तत्वदर्शी होने के साथ-साथ एक महान स्वतन्त्रता सेनानी भी थे। उन्होंने देश में राजनीतिक चेतना को जागृत किया तथा हमारी संस्कृति की विरासत से हमारा परिचय करवाया। वे एक ऐसे विभूति थे जिन्होंने अपना जीवन कोरे उपदेशक के रूप में नहीं बल्कि एक सच्चे कर्मयोगी के रूप में बिताया। वे अध्ययनशील विद्वान थे परंतु उनका दर्शन किताबी ज्ञान की उपज नहीं है बल्कि उनकी मेधा तथा अनुभूति का परिणाम है। उनके विचार उनकी अनुभूतियों का सार है। उन्होंने सिद्ध किया कि सच्चा दर्शन केवल शब्दजाल तथा मानसिक भुलावा नहीं है। दर्शन तो अनुभव की कसौटी पर कसा सार्वभौम सत्य है।

श्री अरविंद का जन्म 15 अगस्त 1872 को कलकत्ता में हुआ। उनके पिता कृष्णधन घोष डॉक्टर थे। उन्हें बचपन से ही अपने घर में अँग्रेजी ढंग का माहौल मिला। उनके पिता अँग्रेजी शिक्षा, विज्ञान, तकनीक तथा अँग्रेजी जीवन शैली से खासे प्रभावित थे। वे चाहते थे कि उनके बच्चे भी अंग्रेज़ो के बच्चों की तरह ही शिक्षा-दीक्षा ग्रहण करें। अतः उन्होंने अनुज पुत्र अरविंद सहित अन्य दो पुत्रों का नामांकन दार्जिलिंग में लोरेटो कान्वेंट स्कूल नामक अँग्रेजी स्कूल में करवा दिया। उस वक़्त अरविंद घोष की आयु पाँच वर्ष की थी। दो वर्षों तक दार्जिलिंग में शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात अरविंद को अपने दोनों बड़े भाइयों के साथ इंग्लैंड भेज दिया गया।

अरविंद घोष 1879 से 1892 तक लगभग चौदह वर्षों तक इंग्लैंड में रहे। इन चौदह वर्षों के दौरान उन्हें भिन्न-भिन्न स्थानो पर रहना पड़ा था। जैसे- वे 1879 से 1884 तक मैनचेस्टर में रहे, 1884 से 1890 तक लंदन में, 1890 से 1892 तक कैम्ब्रिज में तथा 1892 में कुछ माह पुनः लंदन में रहे थे।

पिता डॉक्टर कृष्णधन घोष की प्रबल इच्छा थी कि अरविंद आई.सी.एस. की परीक्षा पास कर उच्च पद पर आसीन हो। अरविंद ने पिता की इच्छानुसार आई.सी.एस. की लिखित परीक्षा पास कर ली परंतु घुड़सवारी की परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहने के कारण उनका चयन आई.सी.एस. में नहीं हो पाया।

इंग्लैंड प्रवास के दौरान श्री अरविंद 15-16 साल की उम्र में ही अँग्रेजी भाषा में कविताएं लिखने लगे। इंग्लैंड में रहकर भी भारत में अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर होने वाले ज़ुल्म की खबरें उन तक पहुँचती थीं, जिससे वे आहत होते थे।

दिसंबर 1892 में अरविंद भारत के लिए रवाना हुए। भारत पहुँच वे बड़ौदा में नौकरी करने लगे। बड़ौदा के कॉलेज में शिक्षण कार्य के अलावा उन्होंने बड़ौदा प्रवास के दौरान संस्कृत, साहित्य, दर्शनशास्त्र तथा राजनीति-विज्ञान का गहन अध्ययन किया। वे पत्र-पत्रिकाओं में सारगर्भित एवं तथ्यपरक लेख लिखते रहे।

अरविंद घोष का विवाह 1901 में कलकत्ता में मृणालिनी देवी के साथ हुआ। मृणालिनी देवी को अपने पति के साथ रहने का कम अवसर ही मिला। 1918 में इंफ्लुएंज़ा से उनकी मृत्यु हो गयी।

अरविंद घोष की शिक्षा-दीक्षा भले ही अँग्रेजी ढंग से हुई हो, पर उनमें देशप्रेम कूट-कूट कर भरा था। बड़ौदा से वे अक्सर बंगाल आते थे तथा बंगाल में सक्रिय क्रांतिकारी नेताओं से देश की दशा पर चर्चा करते थे। देश सेवा की प्रबल इच्छा के कारण अरविंद घोष ने बड़ौदा की नौकरी छोड़ कर मामूली वेतन पर बंगाल के नेशनल कॉलेज में प्रिंसिपल का पदभार ग्रहण कर लिया। साथ ही वे 'वंदे मातरम्' नामक अँग्रेजी पत्रिका का सम्पादन भी करते थे। 'वंदे मातरम्' पत्र में उन्होंने अँग्रेजी नीतियों की कटु आलोचना की।

श्री अरविंद ने बंग-भंग का घोर विरोध किया। उनका नाम गरम दल के नेताओं में लिया जाने लगा। उनपर अलीपुर बम कांड मामले में मुकदमा चला तथा उन्हें जेल में डाल दिया गया। जेल में रहने के दौरान वे योग-साधन में लीन रहने लगे। उन्होंने करीब एक साल जेल में बिताया। चित्तरंजन दास की ऐतिहासिक पैरवी के बल पर उन्हे मुक्त किया गया।

जेल से निकलकर उन्होंने पांडिचेरी का रुख किया तथा वहाँ एक आश्रम की स्थापना की। पांडिचेरी में वे एक योगी या यूं कहें कि एक ऋषि के रूप में रहने लगे। उन्होंने वेद, उपनिषद आदि पर टीकाएँ लिखीं। योग साधना पर कई मौलिक ग्रंथ लिखें। सावित्री, द लाईफ डिवाइन, सिंथेसिस ऑफ योगा, एसेस ऑन गीता, द सिक्रेट ऑफ द वेदा, ह्यूमन साईकिल, द इंटेग्रल योगा, द मदर आदि उनकी श्रेष्ठ कृतियाँ है।

श्री अरविंद मातृभूमि के प्रति अपनी आगाध श्रद्धा प्रदर्शित करते हुए कहते है – 'दूसरे लोग जहां देश को एक जड़ वस्तु, कुछ मैदान, जंगल, पठार और नदी समझते है वहाँ मैं अपने देश को अपनी माता मानता हूँ। मैं इसकी पूजा करता हूँ और माँ की भांति उसकी भक्ति करता हूँ। जब कोई राक्षस माँ की छाती पर बैठकर उसका खून पी रहा हो तो उस समय उसका पुत्र क्या करेगा? क्या वह चुपचाप अपने परिवार के साथ मौज मनाता रहेगा या इसके बदले में माँ को बचाने के लिए दौड़ पड़ेगा?' 'बंगला रचनाएँ', पृष्ठ 182 में वे लिखते है – "जिस दिन हम अखंड स्वरूप मातृभूमि के दर्शन करेंगे, उसके रूप-लावण्य से मुग्ध हो उसके कार्य में जीवन समर्थ करने के लिए उन्नत हो उठेंगे उस दिन वह बाधा तिरोहित हो जाएगी, तब भाषा-भेद से कोई बाधा उपस्थित नहीं होगी, सभी अपनी-अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए साधारण भाषा के रूप में हिन्दी भाषा को ग्रहण कर उस बाधा को दूर करेंगे।"

अरविंद घोष की कुछ उक्तियाँः-

अतीत – अपने अतीत की महत्ता का बोध हमारे लिए ऐसा आकर्षक एवं सम्मोहक नहीं बन जाना चाहिए कि हमें अकर्मण्यता की ओर घसीटकर मृत्यु के मुख में ले जाए।

अत्युक्ति – किसी भी वस्तु के बारे में उद्देश्यहीन अत्युक्ति करना सदा ही बुरा होता है।

अध्ययन – वही कुछ पढ़ना चाहिए जो योग मे सहायक हो या कर्म के लिए उपयोगी हो या जो दिव्य प्रयोजन के लिए क्षमताओं को विकसित करे। निकम्मी वस्तुओं को केवल जी-बहलाव के लिए ऐसे शौकिया बौद्धिक कुतूहल के लिए नहीं पढ़ना चाहिए जो मानसिक रूप से चुस्की ले-लेकर पीने जैसा है।

आध्यात्मिकता–जब हम अहं से भिन्न किसीअन्य चेतना को जानना और उसमें निवास करना या उसके प्रभाव के अधीन होना प्रारम्भ करते हैं तो यह आध्यात्मिकता होती है। यह विशाल, अनंत, स्वयंभू अहंकार आदि से रहित चेतना है।

'श्री अरविंदः मेरी दृष्टि में' नामक ग्रंथ में रामधारी सिंह दिनकर कहते हैं कि योगी, कवि और वैज्ञानिक एक ही व्यक्ति में इन तीनों का समन्वय इतिहास में हुआ था या नहीं, यह प्रश्न विचारणीय है। किन्तु श्री अरविंद के व्यक्तित्व में योगी, कवि और दार्शनिक, तीनों का समन्वय था। दिनकर 'सावित्री' को विलक्षण काव्य रचना मानते हैं। वे कहते हैं – यदि संसार का आध्यात्मिकरण होगा तो मानवता के इतिहास में 'सावित्री'का वही स्थान होगा जो आज गीता का है, वेदों और उपनिषदों का है।

सनातन धर्म एवं आस्था को कर्मकांड, अंधविश्वास तथा अज्ञानता का पर्याय मानकर पाश्चात्य विद्वान प्रायः उपहास करते थे। या तो उन्हें संस्कृत व भारतीय अन्य भाषाओं का ज्ञान न रहने के कारण वे प्राचीन ग्रन्थों के गूढ़ अर्थ समझने में असमर्थ वे श्रेष्ठता की भावना से ग्रस्त होकर इन्हें समझना ही नहीं चाहते थे।

मार्क्स ने आत्मा के अस्तित्व को अस्वीकार कर भौतिकता पर बल दिया। डार्विन के विकासवाद के सिध्दांत ने मनुष्य से देवत्व छीन लिया। फ्रायड को मनुष्य की अवचेतना अवस्था में केवल काम ही परिलक्षित हुआ। ऐसे में श्री अरविंद ने अध्यात्म की वैज्ञानिक एवं तर्कपूर्ण व्याख्या कर इसे न केवल सर्वग्राह्य बनाया वरन मानव की चेतना सत्ता को उच्च सोपान पर प्रतिष्ठित किया। धर्म के सामान्य लक्ष्य से इतर वे वैयक्तिक मोक्ष को ध्येय न मानकर मानवता को अतिमानसी चेतना के स्तर तक ले जाने को अपना ध्येय मानते है।

5 दिसम्बर 1950 को श्री अरविंद घोष की आत्मा भौतिक शरीर को त्यागकर दिव्य आलोक में विलीन हो गई।

चन्दन कुमार बढ़ई
हिन्दी अधिकारी

लकी ब्रेसलेट

आज सुबह उठते ही माँ की आवाज सुनाई दी- "आज शाम घर जल्दी आ जाना। माधुरी अपने परिवार के साथ आने वाली है। कल तू देर रात घर आई थी तो तुझे बताना भूल गई थी।" माँ की आवाज और बर्तनों की खटपट की आवाज साथ-साथ आ रही थी। पता चल रहा था कि माँ बहुत व्यस्त है, आखिर उनकी लाडली माधुरी शादी के बाद पहली बार घर जो आ रही थी। उनींदी आँखों में बचपन की यादें ताजा हो चली थी। माधुरी मेरे बड़े मामा की बेटी थी। गाँव में पढ़ने की उचित सुविधा उपलब्ध नहीं होने के कारण मामाजी ने उसे हमारे घर भेज दिया था। बहुत ही प्यारी, सुशील, संस्कारी एवं एक आदर्श व्यक्तित्व की लड़की थी वह। आयु में मुझसे दो वर्ष बड़ी होने के बावजूद भी मैंने कभी उसे दीदी कहकर नहीं पुकारा। उसने भी मुझ पर बड़े होने का रौब कभी नहीं दिखाया। लोगों की नजरों में हम बहनें कम सहेलियाँ ज्यादा थी।

पर कभी-कभी मुझे उससे बड़ी चिढ़ सी हो जाती थी जब कभी माँ मुझे उसके जैसी बनने की सलाह देती। वह थी सर्वगुणसंपन्न। तड़के सुबह में जब मैं "मैं कौन हूँ? कहाँ हूँ?" जैसे प्रश्नों के जवाब ढूंढती रहती तब तक वह नहा-धोकर तैयार होकर घर के छोटे से मंदिर में घुस चुकी होती। सुबह-सवेरे उसके कारण मुझे पढ़ना भी पड़ता था। मैं कभी-कभी गुस्से में उसे कुछ कह भी देती थी पर इसके बदले में वह मुझसे और ज्यादा प्यार करती। इस लाड-प्यार का गलत फायदा नही उठाया करती थी मैं। अक्सर सरदर्द या पेटदर्द का बहाना बनाकर उससे अपनी गृहकार्य करवा लिया करती थी। मेरी तो अच्छी कट रही थी। हम साथ में स्कूल ओर ट्यूशन जाया करते थे। कभी-कभी स्कूल बंक करके पार्क में सैर करने भी निकल जाते थे। वह हर जगह बड़ी मुस्तैदी से मेरे बचाव में खड़ी रहती। ऐसा कई बार हुआ था कि गलती मेरी रही थी और डाँट उसे खानी पड़ती थी। वह माँ-पापा कि लाडली बन गई थी। सबको चुटकियों में खुश कर देती थी। वह हरदम मुस्कुराते रहती थी। कुल मिलाकर माधुरी में हर तरह के गुण मौजूद थे सिवाए एक अवगुण के। यह अवगुण था उसका अंधविश्वास। वह धूर्त योगी-बाबाओं पर अंधश्रद्धा रखती थी। इस अंधश्रद्धा ने उसे कई बार मुश्किल परिस्थितियों में भी फँसाया था परंतु उस समय वह इनको अपनी गलती मानकर उन्हें नजरअंदाज कर दिया करती थी।

सर्दी-गर्मी-बरसात चाहे कोई मौसम हो वह सुबह उठकर ठंडे पानी से स्नान करती और उसके बाद पूजा करने बैठ जाती। यहाँ तक कि जब कभी बुखार से उसका शरीर तपता रहता तब भी वह इन नियमों का पूर्ण रूप से पालन करती। अक्सर वह अपना टिफिन स्कूल के रास्ते में बैठे बाबाओं को खिला दिया करती और इस तरह खुद भूखी रह जाती थी। यहाँ तक कि वह अपने जेब खर्च के पैसे का उपयोग भी साधु-संतों को दान में देकर किया करती थी। मुझे कभी-कभी इस कारण उस पर क्रोध भी आता था लेकिन उसे समझाना बेकार था। जैसे-जैसे हम बड़े होते गए उसकी अंधभक्ति भी बढ़ती चली गई। निरंतर व्रत-उपवासों ने उसे कमजोर कर दिया था। पर वह अपनी अंधश्रद्धा के खिलाफ कुछ भी सुनना पसंद नहीं करती।

धीरे-धीरे समय बीतता गया और हम स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर चुके थे। अब हम नौकरी के लिए कई जगहों पर इंटरव्यू भी देने लगे थे। सबकुछ ठीक ही चल रहा था। पर एक दिन अचानक सुबह-सुबह हमने माधुरी को हैरान-परेशान कुछ सोचते हुए पाया। पूछने पर पता चला कि कल उसका एक बहुत ही जरूरी साक्षात्कार है और उसका "लकी ब्रेसलेट" उसे नहीं मिल रहा है। यह "लकी ब्रेसलेट" एक बहुत ही अजीब डिज़ाइन वाला काले-भूरे पत्थरों वाला एक हथबंध था। माधुरी इसे हमेशा अपने परीक्षा वाले दिन में पहना करती थी। परीक्षा शुरू होने से पहले उसे ब्रेसलेट पकड़ कर आँखें बंद कर कुछ बुदबुदाते हुए मैं अक्सर उसे पाती। इसके बाद ही वह लिखना शुरू करती थी। मुझे उसकी इस हरकत पर बहुत हँसी आती थी। कई बार मैंने अकेले में उसे उस ब्रेसलेट से बातें करते हुए भी सुना था। और कल इंटरव्यू देने के लिए उसे इसकी सख्त जरूरत थी। फिर पूरे घर तलाशी ली गई। घर का हर कोना, रसोईघर, के मसालों के डिब्बे तक देख डाले गए पर ब्रेसलेट का कहीं अता-पता न था। दोपहर तक सब घर वाले थककर हार मान चुके थे पर माधुरी आँसू भरे आँखों से ब्रेसलेट खोजे जा रही थी। उसकी हालत पर हमें बहुत तरस आ रहा था पर हम उसे समझाने के अलावा अब और कुछ कर भी नहीं सकते थे। पर वो समझने को तैयार नहीं थी। रात तक वह हर जगह ब्रेसलेट खोजती रही और रोती रही। उसकी आँखें सूज गई थी और हल्का बुखार चढ़ आया था। बहुत समझाने-बुझाने के बाद उस रात वो सोयी। पर सुबह उठते ही सारे काम-काज छोड़कर वो ब्रेसलेट की खोज में लग गयी थी। पापा के बहुत समझाने के बाद वह साक्षात्कार देने जाने के लिए तैयार हुई। परंतु उसके मन में यह खौफ हो गया था कि वह आज पास नहीं करने वाली। साक्षात्कार बहुत जरूरी था। वह शाम को साक्षात्कार देकर लौटी तो बहुत मायूस थी। तब हम सब ने उससे कुछ पूछना जरूरी नहीं समझा और माँ ने उसे हाथ-मुँह धोकर आने को कहा। वह उठकर जैसे ही जाने लगी कि उसके हाथ से उसका पर्स छूट कर नीचे जमीन पर गिर पड़ा और उसमें की कुछ चीजें जमीन पर बिखर गयी। वह बिखरी चीजों को उठाने के लिए जैसे ही झूकी कि उसे पर्स के नीचे की तरफ कोने से कुछ जानी-पहचानी लटकती हुई चीज दिखाई दी। तब तक हम सब भी वहाँ जमा हो चुके थे और वह लटकती हुई चीज "लकी ब्रेसलेट" ही थी। माधुरी प्रश्नवाचक नेत्रों से ब्रेसलेट को निहारे जा रही थी। स्पष्ट था कि आज इंटरव्यू के समय वह ब्रेसलेट उसके साथ ही था। फिर क्यों आज इंटरव्यू में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पायी थी? आज फिर मैंने माधुरी को ब्रेसलेट हाथों में लेकर कुछ बड़बड़ाते सुना। उसका चेहरा किसी ऐसे बच्चे की तरह दिख रहा था जिसे बिना किसी गलती के मार पड़ गई हो। उसकी हालत देख कर मुझे हँसी आ गई। तभी माँ की एक चपत मेरे सिर पर पड़ी और मैंने देखा कि माँ-पापा भी दबी हुई आवाज में हँस रहे थे। माँ ने आगे बढ़कर माधुरी को गले लगा लिया। उसकी आँखों में आँसू आ गए थे और उन्ही आँसुओं ने उसके दिमाग से सारे अंधविश्वास को धो डाला था। उस दिन के बाद से माधुरी बदल गई थी और अपनी अंधविश्वास को खत्म करने में लग

गई थी। उसने वो सारी चीजें फेंक दी जिनका संबंध अंधविश्वास से था। पर मैंने उससे उसका ब्रेसलेट यह कह कर छिन लिया कि "रहने दे ये बच्चों को डराने के काम आएगा।" फिर हम बहुत हँसे थे।

माँ की आवाज पर मेरी तंद्रा टूटी। मैंने देखा कि माधुरी अपनी प्यारी सी बच्ची और जीजाजी के साथ दरवाजे पर खड़ी थी। मैं उठी और उसकी बच्ची को गोद में ली और फिर मैं वो ब्रेसलेट उठा लाई थी। हमने देखा कि बच्ची सचमुच ब्रेसलेट देखकर डर गयी थी। और हम हँस पड़े थे सिवाय जीजाजी के।

आरती शर्मा
एमटीएस

कार्यालय में आयोजित वार्षिक खेलकूद की कुछ झलकियाँ

कार्यालय में आयोजित वार्षिक खेलकूद की कुछ झलकियाँ

हार पर विजय

एक समय की बात है जब अमित और श्याम कॉलेज में साथ पढ़ाई किया करते थे। अमित पढ़ाई लिखाई में बहुत तेज था, लेकिन श्याम का पढ़ाई लिखाई में जरा भी मन नहीं लगता था। श्याम हमेशा ही अपने इधर – उधर के कामों में काफी व्यस्त रहा करता था, फिर भी वह कॉलेज रोज समय से जाया करता था। अमित भी शुरूआती दिनों में कॉलेज रोज जाया करता परंतु उसे कॉलेज जाने में थोड़ी देर हो जाया करती थी। अमित पहले बैकिंग की तैयारी करने कोचिंग जाता फिर कोचिंग से वापस लौटते समय वह अपना कॉलेज ज्वायईन करता। श्याम हमेशा कहता "भाई तुम रोज-रोज कॉलेज आने में लेट क्यों हो जाते हो?" अमित ने कहा "भाई मैं तो तुम्हें बता चुका हूँ कि मैं पहले बैंकिग की तैयारी के लिए कोचिंग जाता हूँ फिर वापस लौटते समय कॉलेज का क्लास ज्वायईन कर पाता हूँ। इसी वजह से मुझे कॉलेज आने में थोड़ी देर हो जाया करती है।" श्याम ने कहा कि "भाई अगर ये बात है तो तुम कॉलेज के क्लॉस समाप्त होने के बाद कोचिंग जाया करो।" इसी बात पर अमित ने कहा "भाई ! कॉलेज के क्लॉस समाप्त होने के बाद कोचिंग जाने पर पता चलेगा कि कोचिंग में पढ़ाने वाला ऑर पढ़ने वाला कोई भी नहीं है। कोई मेरे लिए अलग से स्पेशल क्लास भला थोड़े न चलाएगा। खैर कोई बात नहीं भाई। आप ये बताओ आज कॉलेज में अभी तक क्या -क्या पढ़ाई हुई है।" श्याम ने हँसते हुए कहा- "भाई तुम्हें क्या लगता है मैं तुम्हें कुछ बता पाऊँगा, मुझे तो खुद भी कुछ समझ में नहीं आता है भाई फिर मैं तुम्हें क्या बता पाऊँगा?" यह बोलकर वह जोर-जोर से हँसने लगा। "मुझे तो इतना समझ में भी नहीं आता कि खुद को ठीक से पढ़ने के लिए कैसे प्रेरित करूँ। इसी वजह से मैं तुम्हारा इंतजार करता हूँ कि तुम क्लॉस में रहोगे तो मुझे थोड़ी सहायता मिलेगी। इसी वजह से तो मैने तुमसे कहा की भाई ! तुम कॉलेज के क्लास समाप्त होने के बाद अपने कोचिंग को जाया करो।" अमित ने कहा "चल कोई बात नहीं भाई छोड़ ये सब बाते, तुम भी मेरे साथ बैकिंग की तैयारी करने मेरे साथ कोचिंग क्लॉस ज्वायईन कर लो।" श्याम ने कहा "मैं तो कॉलेज की क्लास रेगुलर जाने पर भी कुछ नहीं समझ पाता, फिर मैं बैकिंग या किसी और चीज की तैयारी क्या खाक करूँ।" तब अमित ने हँसते हुए कहा "अंधकार के बाद ही उजाला होता है, बस मन में यह निश्चय कर लो कि कल हमारा है और उसे मेहनत से ही किया जा सकता है।" अमित ने फिर कहा "श्याम तब तुम कॉलेज रेगुलर आकर क्या कर रहे हो, जब आगे तुम्हें कुछ करना ही नहीं है। फिर पढ़ाई लिखाई करने के बहाने कॉलेज रोज आकर अपना समय क्यों नष्ट कर रहे हो?" तब श्याम ने कहा "मैं घर में बोर हो जाया करता हूँ इसलिए मैं रोज समय से पहले ही कॉलेज आ जाता हूँ। इस बात पर अमित बहुत जोर–जोर से हँसने लगा। फिर श्याम ने कहा "तुम्हें मेरी बातों पर हँसी आ रही है मैं तो घर में परेशान रहता हूँ। घर वाले हमेशा परेशान किया करते है कि ये लड़का आगे जाकर क्या करेगा। ऐसी बातों को रोज – रोज सुनकर मैं तंग हो जाता हूँ।" तब अमित ने कहा "इसमें गलत क्या है, घर वाले तो तुमसे पूछेंगे ही कि तुम आगे

जाकर क्या करोगे या यू ही अपने माँ-बाप के पैसों से रोटीयाँ तोड़ोगे।" तब श्याम ने कहा "इसी सब वजह से तो मुझे कुछ समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूँ। यही वजह है कि तुमसे अपनी दिल की बातें शेयर किया करता हूँ। मुझे तुमसे सभी बातें शेयर करने में बहुत अच्छा लगता है। जैसे तुम मुझे समझते हो वैसे मुझे कोई नहीं समझता।" तब अमित ने कहा- "नहीं भाई ! हर कोई तुम्हें समझता परंतु तुम्हें भी तो कुछ अच्छा करना चाहिए, जिससे तुम्हारे घरवालों को भी तुम पर गर्व हो सके। तुम मेरे साथ ही पढ़ाई- लिखाई किया करो।" श्याम ने कहा "यह तो बहुत अच्छी बात है अब तो मुझे थोड़ा समझाने वाला भी मिल गया।"

अमित और श्याम दोनों का घर थोड़ी ही दूर पर था। श्याम रोज अमित के घर आ जाया करता था कभी पढ़ने के लिए तो कभी घर में जब उसका मन नहीं लगता तब भी वह अपना मन बहलाने अमित के घर आ जाया करता। श्याम का अमित के घर आना-जाना काफी बढ़ गया। इसी तरह से अमित के घरवालों के साथ मिलना-जुलना और घर वालों के साथ एक अपनापन सा हो गया। अमित के माँ-पापा भी उसे अपने बच्चे के तरह ही समझने लगें, श्याम को इतना प्यार मिलना श्याम को काफी अच्छा लगने लगा था। श्याम अपने घर से ज्यादा अमित के घर में समय बिताने लगा, मानों वह उसी घर का एक सदस्य हो, अमित के साथ ही खाना –पीना, अमित के साथ ही रहना, अमित के साथ ही ज्यादा समय बिताना उसे बहुत अच्छा लगने लगा और अमित को भी इन चीजों की आदत सी हो गई फिर भी अमित अपनी पढ़ाई-लिखाई में कभी कोई कमी नहीं करता और समय –समय पर श्याम को भी पढ़ाई-लिखाई में मदद किया करता। श्याम को भी उसके साथ पढ़ने-लिखने में अच्छा लगता क्योंकि अमित का पढ़ाने का तरीका ही कुछ खास था। इस तरह श्याम और अमित की दोस्ती और गहरी होने लगी। श्याम और अमित का एक दूसरे के घर आना–जाना लगा रहा मानों वे दोनों एक जान हो। समय बितता गया। अमित का कॉलेज में हर कोई मित्र बनता चला गया क्योंकि अमित था ही औरों से कुछ अलग। अच्छों के साथ हमेशा अच्छा और बुरों के साथ हमेशा बुरा करने से नहीं डरता था। अमित पढ़ाई-लिखाई में तेज होने के साथ-साथ बहुत निडर भी था। वह हमेशा सही का साथ देता और गलत का खुलकर विरोध किया करता। इसी वजह से हर कोई उसे मित्र बनाना चाहते और अमित को भी दोस्त बनाना काफी पसंद था। क्योंकि वह मानता था कि हम सभी दोस्त के साथ ही अपनी परेशानी खुलकर बाँट सकते हैं और एक दूसरे का सहारा बन सकते हैं।

इसी बीच अमित की दोस्ती शीनू नाम की लड़की से हो गयी। शीनू पढ़ाई-लिखाई में बहुत ही तेज थी। वह क्लॉस की टॉपर केन्डीडेट में से एक थी। उसने अपनी पढ़ाई–लिखाई अंग्रेजी मीडियम से की थी। और अमित हिंदी मीडियम का केन्डीडेट था। फिर भी वे दोनों एक दूसरे के बहुत ही गहरे दोस्त बन गए। अमित से मिल कर शीनू को बहुत तरह की मदद मिली क्योंकि अमित के दोस्तों से कोई आँख उठाकर बात भी नहीं करता और शीनू की तो बात ही कुछ और थी। वह तो समय के साथ ही अमित की खास दोस्तों में से एक हो गई थी। इस तरह अमित की औरों के साथ दोस्ती गहरी होते देख श्याम को काफी अंदर से तकलीफ होती। अमित को इस बात का जरा भी एहसास नहीं था कि श्याम को इन बातों से बहुत तकलीफ हो रही है। अमित हमेशा ही श्याम का अच्छा दोस्त था अमित श्याम का हमेशा अच्छा दोस्त बना रहना चाहता था परंतु भगवान को यह मंजूर नहीं था। श्याम को अमित और दोस्तों की अपेक्षा कहीं ज्यादा प्यार और सम्मान करता। हमेशा उसकी हर चीज में मदद भी किया करता फिर भी श्याम को इस बात से तकलीफ पहुँचने लगी क्योंकि वह कॉलेज में जाने पर अपने और दोस्तों के साथ खासकर शीनू के साथ थोड़ा ज्यादा

समय बिताता। अमित को शीनू के साथ समय बिताता देख श्याम को अच्छा नहीं लगता, पता नहीं उसे क्यों इस बात से तकलीफ होती। धीरे-धीरे समय बितता गया और श्याम पर इस बात का बहुत ज्यादा असर होने लगा, जबकि अमित इन बातों पर कभी भी ध्यान नहीं देता। कुछ समय बीत जाने के बाद जब कॉलेज की फाइनल परीक्षा नजदीक आने लगी तो अमित ने श्याम से कहा, "भाई ! तुम एक काम करो कल से तुम मेरे घर पर शाम में ही चले आना ताकि तुम्हारी परीक्षा की तैयारी अच्छे से हो सके।" श्याम ने हामी भर दी। श्याम घर पर जब तब चला आया करता और परीक्षा की थोड़ी बहुत तैयारी करता परंतु उसका पढ़ने में जरा भी मन नही लगता। श्याम का घर पर आना और अमित के परिवार वालों से लगातार मिलना – जुलना उसे अमित के परिवार के करीब ले गया था। अमित के परिवार वाले जिस तरह से अमित को प्यार करते ठीक उसी तरह से श्याम को भी प्यार मिलने लगा था। इस बात से श्याम बहुत खुश रहता। इसी बीच अमित कॉलेज जाना थोड़ा कम करने लगा क्योंकि फाइनल परीक्षा का समय नजदीक आ रहा था। परंतु श्याम को घर में मन नहीं लगने के कारण वह कॉलेज भी रेगुलर चला जाता था। अमित ने श्याम से कहा- "तुम कॉलेज जाने के बजाय मेरे घर पर ही आकर परीक्षा की अच्छी तरह से तैयारी कर लो।" लेकिन वह कॉलेज करने के बाद अमित के घर जाता उसके बाद अपने घर को जाता था। अमित के घर जो कुछ खाना बनता श्याम को भी खाने को मिलता और श्याम भी अपने परिवार की तरह उसे चुप-चाप खा लिया करता। अमित को इस बात से बहुत खुशी होती कि वह मेरे घर से होकर अपने घर को जाता। परंतु अमित अपनी परीक्षा की तैयारी में लगे रहने के कारण क्लास नहीं जाना चाहता था ताकि वह घर में ही परीक्षा की तैयारी कर पाए। परंतु श्याम चाहता था कि अमित भी उसके साथ कॉलेज में क्लास में उसके साथ रहे। अमित ने कॉलेज जाने से इनकार कर दिया और कहा, "भाई मैं घर पर ही रहकर परीक्षा की तैयारी करूंगा ताकि मैं परीक्षा में अच्छे नंबर से उर्त्तीण हो सकूँ।" श्याम को इस बात से मन में थोड़ा दुख होने लगा कि अमित घर में ही रहता है और मैं कॉलेज अकेला चला जाता हूँ। श्याम का मन कॉलेज में अमित के बिना बिल्कुल भी नहीं लगता वह इसी वजह से परेशान रहने लगा। अमित ने श्याम से बार-बार कहा- "तुम भी कॉलेज जाने के बजाय मेरे घर पर ही आकर पढ़ाई कर लिया करो तो तुम्हें परेशानी किस बात की है।" श्याम ने हामी भरी। अमित भी बीच–बीच में कभी कभार कॉलेज चला जाया करता था ताकि परीक्षा सें संबंधित जानकारी उसे समय पर मिल सके। अमित का कॉलेज में एक अलग ही पहचान था। कुछ समय बाद परीक्षा का दिनांक सामने आ गया। परीक्षा का दिनांक सामने आने से हर कोई घबराने लगा। इधर श्याम को भी बहुत चिंता सताने लगी कि उसका क्या होगा, वह पास करेगा या नहीं। जब कॉलेज में परीक्षा का एडमिट कार्ड आया तो श्याम और अमित भी कॉलेज पहुँचे। तभी अमित के बहुत सारे दोस्तों ने अमित से पूछने लगे कि कौन-कौन से प्रश्न आ सकते हैं। अमित ने बताया कि कोई भी प्रश्न सिलैबस के अनुरूप ही आएंगे। इसी बीच अमित शीनू से मिला। उसने भी अमित से पूछा यार परीक्षा में कौन-कौन से प्रश्न आ सकते हैं।

इन सब बातों को श्याम जानता था कि अमित और शीनू दोस्त से भी बढ़कर हैं। श्याम को लगता था कि अमित और शीनू के बीच कुछ तो चल रहा है। श्याम परीक्षा की तैयारी करने के बजाय इन दोनों के बारे में ही सोचता रहता। अमित और शीनू के बीच न जाने किस तरह के रिश्ते बनते जा रहे हैं। इधर अमित अपनी परीक्षा की तैयारी में पूरी जोर – शोर से लगा हुआ था। इधर श्याम धीरे – धीरे अमित के घर आना थोड़ा कम कर दिया था। अमित ने श्याम से घर नहीं आने का कारण भी पूछा। श्याम ने अमित और शीनू के रिश्तों के बारे में उससे आखिरकार पूछ ही डाला। अमित ने बताया की उन दोनों में बस दोस्ती है। अमित ने श्याम को इन सब में दिमाग लगाने से मना करने को कहा और साथ ही

साथ आने वाले परीक्षा पर ध्यान देने के लिए भी कहता है। अमित की बातों से श्याम का मन थोड़ा भर आया और उसने भी परीक्षा में पास करने का मन बना लिया। परीक्षा के शुरू होने में बहुत कम दिन ही बचे हुए थे। श्याम भी परीक्षा पास करने के लिए जम कर तैयारी कर रहा था। अंततः परीक्षा शुरू हो गई। परीक्षा पूर्ण होने और कुछ समय बीत जाने के बाद जब परीक्षा का परिणाम आया तो अमित, शीनू और उसके बहुत सारे मित्र सभी बहुत अच्छे नंबर से उत्तीर्ण हुए लेकिन श्याम परीक्षा में पास नहीं हो सका इसी वजह से वह अब अमित के घर भी आना बंद कर दिया। लेकिन अमित ने श्याम के घर जाकर उसे बहुत समझाया कि हार से डरना नहीं चाहिए। अपने पर भरोसा रखने की भी अमित ने सलाह दी। फिर श्याम अगले साल अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुआ और जल्दी ही सरकारी नौकरी भी प्राप्त किया।

ध्यान रहे हार मानना ही जिंदगी नहीं है, हार से डटकर लड़ना और हार को हराना भी जिदंगी है, हार से लड़ना और उस पर विजय पाना भी जिदंगी है, लड़कर अपने जीवन में सफलता पाना सबसे बड़ी विजयगाथा है। जिस तरह अंधेरे के बाद उजाला आता है उसी तरह अपने जीवन में भी अंधकार के बाद प्रकाश लाना भी हमारा ही धर्म है।

अमित कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

गंगा

माँ तुझे शत् शत् प्रणाम
आपका महिमामयी रूप महान
मंदाकिनी, सुरसरिता, भगीरथी, विष्णुपदी,
देवपगा, हरिनदी आदि आपके कई नाम

विशाल हिमालय से है निकलती
कल-कल बह गोमती यमुना में जा मिलती
अखिल भारत को सिंचित कर
हो जाती सागर में परिणत ।

कट जाते हैं सारे पाप जो
करे माँ गंगा का स्नान ।
वेदों ने किया इनका गुणगान
मोक्षदायिनी सुरसरिता महान

न भेदभाव, न जात-पात,
न ऊँच-नीच और न छुआ-छूत,
धोती जा रही है सबके पाप
माँ गंगा का सब पर उपकार

देवों की नदी है माँ गंगा,
जिनका मिला है हमारे देश को वरदान
हो रही है गंगा मैली
किसी को न इसकी परवाह
बहा रहे कूड़ा-कचरा और खर-पतवार

भारतीय संस्कृति का आधार है गंगा
अमृत जल से करती जन-जन का कल्याण
फसलों को सींच भर रही भू में प्राण
माँ तुझे शत् - शत् प्रणाम ।

जितेन्द्र शर्मा
वरिष्ठ लेखाकार

जीयले भर दुख बा !

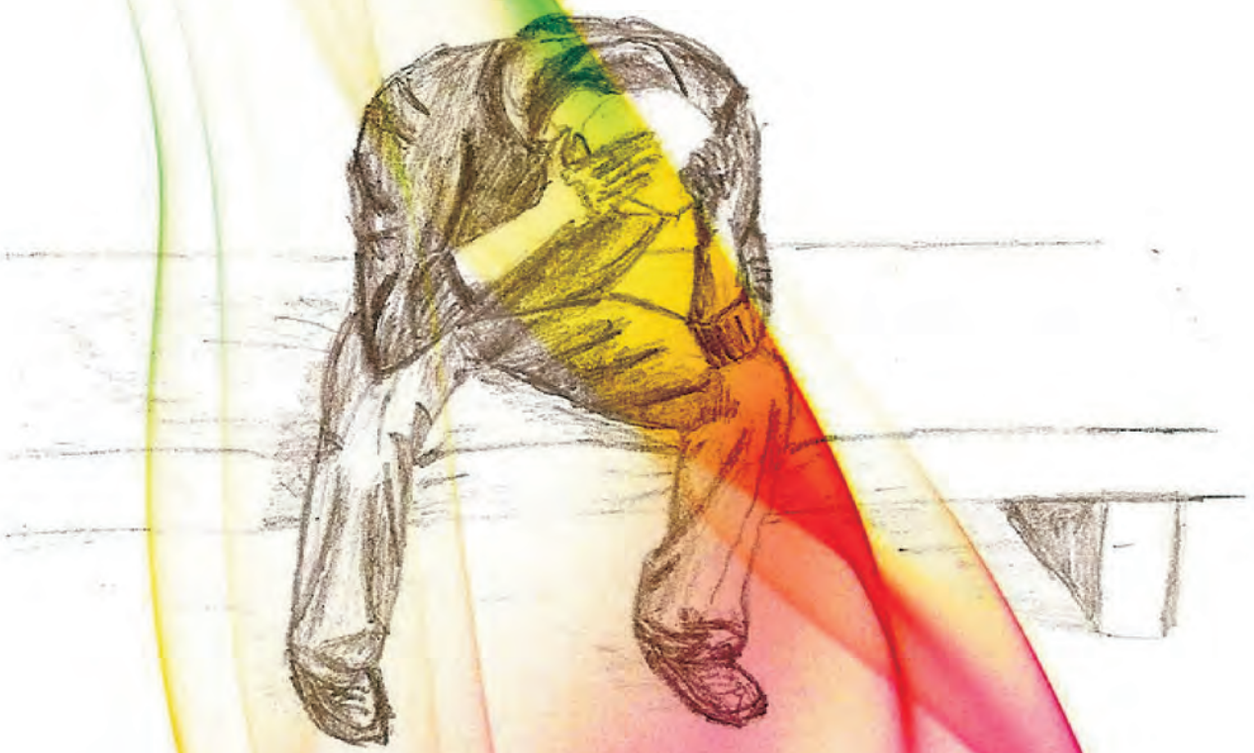

जिंदगी का फलसफा बड़ा ही विचित्र है। कोई इसे मस्ती के पैमाने से मापता है तो कोई जिंदगी को इसके जद्दोजहद से आँकता है। किसी की जिंदगी के कैनवास पर सजे ढेरों रंग हैं, तो किसी की ज़िंदगी पुरानी ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों सी एकदम बेरंग है। किसी के लिए जिंदगी का मतलब जग के लिए खुद को मिटा देने का दर्शन है तो कुछ के लिए जिंदगी बेहद निजी लम्हों का संकलन है। किसी के लिए जिंदगी पहेली है तो किसी की सहेली है जिंदगी। ज़िंदगी किसी के लिए भीड़ का अक्स है तो किसी के लिए जिंदगी का मतलब बस एक शख्स है। कोई जिंदगी को उदास नजरों से निहारता है तो कोई जिंदगी की आगोश में हसीन सपने सवाँरता है। कोई जिंदगी के बोझ में दबा जा रहा है तो कोई जिंदगी की मौज में बहा जा रहा है। कोई ज़िंदगी को खुद में अधूरा मानता है तो कोई इसे मौत के बाद पूरा मानता है। जिंदगी सबकी है और इसके प्रति सबके अपने-अपने फलसफे है, कोई खुलकर कहता है जिंदगी से तो किसी के भाव दबे-दबे से हैं। ज़िंदगी की सबकी अपनी परिभाषा है, सबने इसे अपनी तरह तराशा है। लेकिन एक लम्हा ऐसा भी है, जहां सबकी अपनी राय एक आम राय में बदल जाती है। यह आम राय बस यह बताती है कि कुछ कहो लेकिन ज़िंदगी बड़ा सताती है। ज़िंदगी के सताने के दर्द में कोई रोता है, बिलखता है, खुद को डुबोता है तो कोई चुपचाप उदास मन से इस दर्द को ढोता है। लेकिन कुछ लोग अपनी हंसी के भीतर इस पीड़ा को छिपाने की नाकाम कोशिश करते हैं। अगर किसी मंच पर खड़े होकर कोई छाती ठोककर और गला फाड़कर जिंदगी का मज़ाक बनाते हुए मिल जाए तो भ्रमित होने की जरूरत नहीं मित्रों। इसका मतलब यह नहीं कि बंदा जिंदगी के फूल-टू मजे ले रहा है, बल्कि इस बात की संभावना ज्यादा है कि ज़िंदगी ने उसके साथ जो किया है, वह उसी का भड़ास ही निकाल रहा है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि जिंदगी बड़ी है, छोटी है, जवान है, बूढ़ी है, स्त्री है या मर्द है-फर्क इस बात से पड़ता है कि ज़िंदगी में तकलीफ़ों का काँटा किसको, कितना, कब-कब और कहाँ-कहाँ चुभ रहा है।

सदियों पहले महात्मा बुद्ध कह गए थे कि "सर्वत्र दुखम-दुखम"। मतलब ज़िंदगी का आदि, अंत और सार ही दुख है। आदिकवि वाल्मीकि नें भी क्रोंच पक्षी की पीड़ा को अपने हृदय में अनुभूत किया और कहीं न कहीं इस दुख की ही वास्तविक अनुभूति या सहानुभूति का प्रतिफल रामायण है। साहित्य चाहे भारतीय भाषाओं का हो अथवा विश्व की अन्य भाषाओं का सर्वत्र विरह, वेदना, वियोग और करुणा का स्वर ही सुनाई पड़ता है। छायावादी कवि सुमित्रा नन्दन पंत ने भीं दुख की महता का बखान और कवितई के लिए इस दुख की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए लिखा है- "वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान। निकलकर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अंजान।" इसी बात में थोड़ा सा हास्य का पुट डालते हुए छविनाथ मिश्र लिखते हैं – "सच्चा कवि वो, जो भर-भर बाल्टी आँसू बहाए, पत्नी जिसमें कपड़े धो ले, बच्चे खूब नहाए।" मतलब साफ है कि साहित्य और कविता के मूल में भी पीड़ा की भूमिका है। वैसे भी साहित्य-शास्त्रियों ने कहा ही है कि साहित्य अनुकृति ही है जीवन और जगत की। इतना तो साफ है कि ये जो कवि, कविता और कवितई की पीड़ा है, वो असल में जीवन-जगत की पीड़ा ही है।

पीड़ा सतत है, चिर है, शाश्वत है। लेकिन समय के साथ पीड़ा उर्फ कष्ट ने अपने रूप में बदलाव किए हैं या फिर यह कहिए कि पीड़ा का अपग्रेडेशन हुआ है। किसी जमाने में पीड़ा का संबंध स्वयं के कष्ट तक निहित था। यदि उसके क्षेत्रफल में बहुत ज्यादा विस्तार होता भी था तो वह दूसरों के कष्ट तक सिमट जाता था। भाव यह है कि सहानुभूतिवश हम भी उसकी पीड़ा में शरीक हो जाते थे। लेकिन अब तो पीड़ा के लिए मात्र अपने या दूसरों के दुख पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। अब तो पीड़ा का भी ग्लोबलाईजेशन हो चुका है। हम दूसरे के हंसी के ठहाकों को देखकर भी दुखी होने की कला में महारथ हासिल कर चुके हैं। दुखी होने के अब तो किसी खास वजह की जरूरत नहीं होती, बस अपनी चेतना को जगाईए और इधर-उधर नजर दौड़ाइए, सड़क पर तेज रफ्तार से दौड़ी आ रही मर्सिडीज कार को देखकर भी आपमें जलन पैदा हो सकती है। यह जलन पहले चिढ़ में तब्दील होगी फिर क्षणांतर में पीड़ा में। खैर अब तो अपनी बाइक की टूटहिया हेडलाइट को देखकर भी आपको रोना आ सकता है।

ऐसा है कि"सुकून" नाम की चिड़िया इस धरती से लुप्तप्राय होने को है। सुकून की तलाश में पहले लोग कैलाश पर्वत की ओर कूच करते थे या अरण्य में साधनारत होते थे। लेकिन अब तो हाइटेक बाबाओं और तथाकथित संस्कारी चैनलों पर चलने वाले प्रवचनों के शरण में जाना ही ट्रेंड बन गया है। इसके बावजूद तथाकथित बाबा और चैनल जिस तरह से आध्यात्मिक जीवन की महत्ता और भौतिक जीवन की व्यर्थता पर ज्ञान बाँट रहे हैं, जब बाबाओं के शरीर पर लदे जेवरात और चैनलों के टीआरपी के खेल पर निगाह पड़ती है तो इनके "सुकून" की कलई खुल जाती है। पहले लोग मौसम और उसके बदलने का लुत्फ उठाया करते थे, लेकिन आजकल तो जाड़े में लोग गर्मी की वकालत करते फिरते हैं और गर्मी के आते ही इंद्रदेव की गुजारिश में दोनों हाथ ऊपर। लेकिन चैन-सुकून यहाँ से भी नदारद ही है। बरसात शुरू हुई नहीं कि धरती के साथ ही लोगों का मन भी किच-किचाने लगता है। अगर गलती से बरसात की बूँदे दो दिन ज्यादा बरस जाएँ तो फिर पूछिए ही मत। ऐसा हाय-तौबा मचता है कि सरकार क्यों नहीं बरसात को राष्ट्रीय आपदा घोषित कर रही है। तो साहब एक बात एकदम क्लियर है कि सूखा हो या बाढ़ हो, राहत कहीं नहीं है। सिर पर दुख का ठीकरा तो जन्म के साथ ही फूट जाता है। भला किसी ने देखा है कि कोई बच्चा दाँत निपोरते हुए पैदा हुआ हो। अगर ऐसा हो भी जाए तो भी लोगों पर कयामत ही बरसेगी। खैर बच्चा तो बच्चा है और अगर वह मुंह खोलेगा तो रोएगा ही। लेकिन इस मामले में बड़े भी ज्यादा बड़प्पन नहीं दिखा पाते हैं।

खुद को मेच्योर कहने वाली आबादी भी दुख नाम की बीमारी से पूरी तरह ग्रसित है। किसी को तकलीफ यह कि उसे बेटा चाहिए था और बेटी पैदा हो गई तो किसी के साथ ठीक इसके उलट स्थिति है। बहुतों की तकलीफ तो यह होती है कि हमारे घर भर में सभी फेयर एंड लवली ब्रांड वाले हैं तो बच्चा कालीचरण कैसे हो गया। कुछ लोग तो ऐसे दीवाने होते हैं कि बच्चे के जन्म के पहले ही अल्ट्रा सोनोग्राफिक रिपोर्ट वाली फोटो पर आधा घंटे आँख गड़ाने के बाद दुखी मन से बताते हैं कि बच्चे की नाक तो दादी की तरह हो गई है, अगर नानी की तरह होता तो ज्यादा क्यूट होता। इसी क्यूटनेस के चक्कर में जन्म के बाद बच्चे की तस्वीर को इतनी दफा फोटोशॉप किया जाता है कि कुछ एक साल बाद उस फोटो को फेसबुक पर देखकर खुद ही कनफ्यूज हो जाते हैं कि यह बच्चा तो जाना-पहचाना लग रहा है, लेकिन है किसका समझ नहीं आ रहा। आजकल बच्चे का नामकरण भी सिरदर्द ही बन गया है। गूगल में सर्च करके पहले सैकड़ों उल्टे-सीधे नाम को निकालना फिर उसमें से किसी एक नाम को सिलैक्ट करना भी हिमालय लांघने जैसा ही कठिन है। सेलेक्शन होने के बाद भी कई और पड़ाव बाकी होते हैं। कोई नाम मम्मी को पसंद है, तो बुआ को आउटडेटेड लगता है। अगर किसी नाम में चाचा की हामी है तो दादा को उस नाम में संस्कार नहीं दिखता और अगर किसी एक नाम पर सहमति बन भी गई तो वह नाम नानी की जुबान पर चढ़ेगा ही नहीं और चढ़ भी जाए तो जुबान ऐंठ जाएगी। लेकिन उसके बाद भी वही दुख कि काश यह न रखकर वो रखा होता। पालन-पोषण, दवा-दारू और शिक्षा-दीक्षा आगे की तकलीफ़ों के शीर्षक हैं। बच्चे को क्या खिलाना-पिलाना है, क्या पहनाना है और कहाँ इलाज़ कराना इनको लेकर भी आधे से ज्यादा माँ-बाप बेचैन ही रहते हैं। दूसरे के बच्चे को नेस्टम खाते देख अपने बच्चे के सेरेलेक से विश्वास उठने लगता है। माँ-बाप अपने बच्चे को चाहे जितनी सुंदर पोशाक पहना दें, लेकिन दूसरे के बच्चे की पोशाक की छाती पर ब्रांड के चमकते लोगो को देखते ही मिजाज खट्टा होने लगता है।

तकलीफ़ों का कोई दायरा नहीं है। कुछ करो तब तकलीफ, ना करो तब तकलीफ। परीक्षाओं में कठिन प्रश्न आ जाएँ तो समस्या कि अगर इतना ही जानता तो यूपीएससी क्रेक कर गया होता, यहाँ प्राइमरी स्कूल में मास्टरी की परीक्षा नहीं देता। ठीक उसी तरह अगर सवाल आसान आ जाए तो यह समस्या कि इसका उत्तर पड़ोस का लालजी चौरसिया पानवाले को भी पता होगा, फिर हम बारह-बारह घंटे क्या घास छिलने के लिए फूँक रहें थे। नौकरी न मिले तो बेरोजगारी की लानत झेलो और अगर मिल जाए तो यह तकलीफ कि यह तो मेरी काबिलियत तो पीएमओ में सचिव लेवल की थी, लेकिन यहाँ पी.डबल्यू.डी. फ़ाइल इधर से उधर करके दिन गुजार रहें हैं, जैसे आदमी की काबिलियत की कोई कदर ही नहीं जमाने में। इतना जरूर है कि मुंगेरी लाल के इन हसीन सपनों की जुगाली करते वक़्त यह भूल जाते हैं कि कल तक अपने नौकरीपेशा दोस्त की मेहरबानी से ही इस पद के लिए फार्म भर पाए हैं। दफ्तरी ज़िंदगी में तो तनख़्वाह से लेकर काम करने के ढंग और तबादले के टेंशन से लेकर एपीआर के बक-झक तक रिटायरमेंट नजदीक चला आता है, लेकिन सुकून और सुख नहीं आते। बाजार की साधारण दुकान पर दो रुपए की छूट पाने के लिए तेरह दुकान निहारने और मोल-तोल में तीन किलो खून सुखाने के बाद सुपरमार्केट के "फ़िक्स्ड-प्राइस" और बिग-बाज़ार की "50% ऑफ" वाला टैग हमें ज्यादा लुभाता है। लेकिन थोड़ी देर बाद ही समझ आता है कि मुहल्ले के दुकान से ही वह समान लेना ज्यादा फायदे का सौदा होता। परिणाम के रूप में अंततः वही दुख ही मिलता है, जिसका क्रम चलता ही रहता है।

दरअसल दुख का संबंध आदमी की इच्छा से है। यह ठीक है कि हम आदमी हैं और आदमी हैं तो चेतना है। अगर चेतना है तो इच्छा का होना लाज़मी है। लेकिन इच्छा इतनी बड़ी और इतनी बेशरम न हो जाए कि आदमी की आदमीयत

ही खाक हो जाए, फिर उस इच्छा का न तो सार रह जाता है और न संदर्भ। यह भी सही है कि मानव सभ्यता के विकास के साथ इंसानी ज़िंदगी में भौतिकता ने सेंध मारी कर दी है, भौतिक वस्तुएँ अब केवल आदमी की जरूरत नहीं बल्कि स्टेट्स सिंबल भी बन चुकी हैं। अब उनकी उपयोगिता से अधिक उनकी ब्रॉडिंग महत्वपूर्ण हो गई हैं। तन ढकने के लिए कपड़े जरूरी हैं, फटे कपड़ों को पहनना गरीब लोगों की मजबूरी है, लेकिन नए कपड़ों को फैशन का हवाला देते हुए फटेहाल बनाना और अनाप-शनाप दाम में उनकी खरीद-बिक्री न केवल चरम पूंजीवाद का संकेत है, बल्कि हमारी इच्छाओं के भीतर पनप रही संवेदनहीनता का उदाहरण है। भौतिक वस्तुएँ और साजो-सामान जीवन को जीने के वैकल्पिक साधन-मात्र हैं, लेकिन लोग इन भौतिक माध्यमों को ही जीवन का सार मान बैठे है, जिसका अंतिम परिणाम दुख ही है। लेकिन विडम्बना तो यह है कि न तो भौतिक साधनो का संबंध और न ही उसके लिए उत्पन्न होने वाली इच्छाएँ वास्तविक है और न तो उनकी प्राप्ति पर मिलने वाला सुख और न प्राप्त होने पर मिलने वाले दुख का स्वरूप ही वास्तविक है। स्पष्ट है कि आज की आधे से अधिक पीड़ा कृत्रिम और बनावटी हैं, साथ ही सुख की अनुभूति भी क्षणिक और अवास्तविक है। हमने अपनी इच्छाओं को इतना ज्यादा तूल दे दिया है कि उनके पूरे न होने या फिर उनमे थोड़ी भी कमी होने पर ऐसा प्रतीत होता है कि जिंदगी का कोई मतलब ही नहीं रहा। इच्छाओं को पूरा करने के लिए उनके पीछे भागना जायज है, लेकिन इस चक्कर में ज़िंदगी को पीछे छोड़ देना बेमानी और मूर्खता है। ज़िंदगी उस एक क्षण का नाम नहीं जब हम किसी सफलता का स्वाद चखते है, बल्कि ज़िंदगी उस सफलता के लिए किए जाने वाले प्रयास के हर क्षण में निहित है। अन्यथा ताउम्र "जीयले भर दुख बा!" कहते हुए पछताने से ज्यादा बेहतर होगा ज़िंदगी की हर अनुभूति का स्वाद लेना।

कुन्दन कुमार रविदास
कनिष्ठ अनुवादक

संघर्ष

"ब्रजेश, कुसुम, सुबह हो गई। जल्दी उठो! स्कूल जाना है।" कहकर शांति अपने बच्चों को जगाती है, उन्हें स्कूल के लिए तैयार करती है। बच्चों के लिए खाना बनाना, उन्हें स्कूल सही समय पर भेजना आदि शांति की दिनचर्या बन चुकी है। शांति के पति सुरेश के पास एक छोटी सी आटा-चक्की की दुकान है। दुकान से प्राप्त आय बेहतर जीवन के लिए पर्याप्त नहीं थी। दिन-प्रतिदिन बढ़ती महंगाई और प्राइवेट स्कूलों की बढ़ती हुई फीस को देखते हुए शांति ने कुछ काम करने की सोची। अतः शांति ने घर में ही कपड़ा सिलने का काम शुरू किया ताकि वह अपने बच्चों को बेहतर भविष्य दे सके। शांति का बस एक ही सपना है कि उसके बच्चें पढ़-लिखकर अच्छी नौकरी पा सकें।

ब्रजेश बचपन से ही बहुत होनहार था। प्रत्येक कक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होता था। उसकी बहन कुसुम भी पढ़ाई में अच्छी थी। दोनों भाई-बहन खूब मन लगाकर पढ़ाई कर अपने माँ-पापा के सपनों को पूरा करना चाहते थे। स्कूल से आने के बाद दोनों अपना गृहकार्य पूरा करते और उसके बाद एक साथ ही खेलने जाते। इस प्रकार यह पूरा परिवार खुशीपूर्वक दिन व्यतीत कर रहा था।

वो कहते हैं ना कि खुशियाँ एक जगह टिककर ज्यादा समय तक नहीं रहती। एक दिन शांति की तबीयत अचानक बहुत खराब हो गई। उसे डॉक्टर के पास ले जाया गया। डॉक्टर ने बताया कि शांति को ब्लड कैंसर है, अब वह कुछ ही दिनों की मेहमान है। इसके बाद पूरा परिवार सदमे में आ गया और कुछ ही दिनों बाद शांति की मौत हो गई। छः साल का बच्चा ब्रजेश और चार साल की बच्ची कुसुम को यह ज्ञात नहीं था कि मौत क्या होती है, कुछ भी पता नहीं था, उनकी माँ उन्हें हमेशा के लिए छोड़कर जा चुकी थी। दोनों बच्चे अपने पिता से पूछते, पापा माँ कहाँ है? माँ कब आएगी?" सुरेश अपने बच्चों से कहता, "बेटा, तुम्हारी माँ भगवान के पास गई है, वो जल्द ही लौटकर आएगी।" रात को आकाश में चमकते तारों को दिखाकर कहता," वो देखो तुम्हारी माँ देख रही है।" नादान बच्चे उनकी बातों को सच मान लेते थे।

शांति की मौत के बाद सुरेश पर जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ गया था। बच्चों को स्कूल भेजना, खाना बनाने से लेकर घर का सारा काम, आटा-चक्की की दुकान संभालना सब उसे अकेले ही करना पड़ता था। कुछ समय बाद, सुरेश ने बच्चों के देखभाल एवं पालन-पोषण को ध्यान में रखते हुए दूसरी शादी कर ली। दूसरी पत्नी अर्पिता के आने के बाद घर फिर से पहले की भाँति चलने लगा। अर्पिता घर का कामकाज करती और सुरेश अपनी दुकान संभालता। बच्चे भी धीरे-धीरे अर्पिता को अपनी माँ समझने लगें। शादी के दो वर्ष बाद अर्पिता को एक पुत्र हुआ। वह अपने पुत्र शिवम को अच्छे से पालन-पोषण करने लगी। अब वह ब्रजेश और कुसुम से घर का काम-काज करवाने लगी। सुरेश की दुकान

भी बंद पड़ गई। जिसके कारण आमदनी काफी कम हो गई थी। इस कारण से पति-पत्नी ने बच्चों को प्राइवेट स्कूल से हटाकर सरकारी स्कूल में नामांकन कराने का निर्णय लिया। अब दोनों बच्चे पास के ही एक सरकारी स्कूल में पढ़ने लगें। अर्पिता रोज सुबह ब्रजेश को जगाती और उसे मिल की सफाई करने को कहती। कुसुम से भी घर का काम करवाती जैसे-झाड़ू लगाना, पोछा लगाना, बर्तन साफ करना, बनाना आदि। वे दोनों जब इन कामों को करने से इंकार करते तो वह दो को बहुत प्रताड़ित करती जिससे दोनों बच्चे सहमे से रहने लगें। घर के काम करने के बाद दोनों साथ-साथ ही स्कूल जाते थे।

एक दिन स्कूल से घर आने के बाद शाम को ब्रजेश और शिवम छत पर खेल रहे थे। अचानक शिवम सीढ़ियों से नीचे गिर गया और वह काफी ज़ोर से रोने लगा। इस कारण अर्पिता ने ब्रजेश की खूब पिटाई की है। ब्रजेश दर्द से कराहते हुए रोते-रोते गया। अगले दिन सुबह जब स्कूल पहुँचा तो शिक्षक ने पूछा " होमवर्क क्यूँ नहीं किया?" वह खड़ा होकर रोने लगा। उसका पूरा शरीर कांप रहा था। वह ठीक से खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। शिक्षक उसे इस तरह रोता देख हैरान हो गए। वे स्वयं उसके पास गए और उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे चुप कराने लगे। लेकिन जैसे ही शिक्षक ने उसके कंधे पर हाथ रखा तो वह अचानक जोर से चिल्लाया। शिक्षक कुछ समझ ही नहीं पा रहे थे। वे सोचने लगे कि मेरे छूने मात्र से वह इतनी ज़ोर से क्यों चिल्लाया। इस कारण से शिक्षक ने उसे कमीज उतारने को कहा। परंतु उसने नहीं उतारी और बस रोए जा रहा था। शिक्षक ने खुद उसकी कमीज उतारी ओर उसके शरीर को देख कर दंग रह गए। कक्षा में उपस्थित सारे सहपाठी उसका शरीर देखकर हैरान हो गए। सबकी रूह काँप गई। उसके शरीर पर चोट के काले-काले निशान थे। जहाँ-तहाँ कटे-फटे थे। पूरा शरीर चोट के कारण सूज गया था। शिक्षक के बहुत पूछने पर उसने सारी बातें बताई। उसकी बातों को सुनकर सभी की आँखें नम हो गई। सबके मन में एक ही प्रश्न उठ रहा था कि कोई माँ इतनी कठोर कैसे हो सकती है? माँ तो दया, करुणा, प्रेम और ममता के लिए जानी जाती है।

कुछ समय के बाद ब्रजेश के पिता ने उसे समाचार पत्र बाँटने के काम में लगा दिया। उस समय उसकी उम्र लगभग 10 वर्ष थी। उसे सुबह 4 बजे जग कर अखबार एजेंसी के बाहर कतार में लगकर अखबार लेना होता था और फिर उसे घर-घर पहुँचाना होता था। अखबार बाँटने के बाद वह आटा-चक्की मिल की सफाई करता और उसके बाद स्कूल जाता। कई बार जब उसके मित्र उसे अखबार बाँटते देखते तो वे उसका मज़ाक उड़ाते, जो उसे अच्छा नहीं लगता था। अतः उसने एक बुक-स्टाल खोलने की सोची। उसने एक गुमटी (लकड़ी का बना हुआ) जो सड़क के किनारे स्थित थी, किराए पर लिया। जहाँ वह अखबार के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाएँ, प्रतियोगी परीक्षा संबंधी फॉर्म, किताबें आदि बेचने लगा। उसे जब भी समय मिलता वह किताबें पढ़ा करता और उसके अपनी पढ़ाई जारी रखी। वह दसवीं बोर्ड परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ। भाई के उत्तीर्ण होने पर कुसुम काफी खुश थी। वह चाहता था कि उसकी बहन भी पढ़ाई जारी रखे और अगले वर्ष ही उसकी दसवीं बोर्ड की परीक्षा थी किन्तु उसके पिता ने कुसुम की

शादी ऐसे व्यक्ति से तय कर दिया जो उसके उम्र से काफी बड़ा था। दोनों भाई-बहन पिता के इस निर्णय से खुश नहीं थे। ब्रजेश ने अपने पिता को बहुत समझाया परंतु वे नहीं माने और इस तरह से कुसुम की शादी करा दी गई। ब्रजेश ने अपनी पढ़ाई जारी रखी। उसने इंटरमीडिएट में अपना नामांकन करवाया। कॉलेज की पढ़ाई के साथ-साथ बुक-स्टॉल और मिल चलाना काफी चुनौतीपूर्ण था। उसके बाद उसने ग्रेजुएशन की पढ़ाई भी की।

सबकुछ ठीक-ठाक ही चल रहा था कि एक दिन वहाँ हिन्दू-मुस्लिम के बीच साम्प्रदायिक दंगा हो गया। इस दंगे में उपद्रवियों ने दुकानों में आग लगा दी। ब्रजेश का बुक-स्टाल भी इसी दंगे की आग में जलकर खाक हो गया। ब्रजेश को एक बड़ा सदमा लग गया। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह अब क्या करेगा? वह बहुत दुखी था। उसके पिता ने उसे हिम्मत दी कि कोई बात नहीं वे नई दुकान लेंगे और फिर से एक नई शुरुआत करेंगे। उसने एक मकान में एक कमरा किराए पर लेकर फिर से बुक स्टॉल का दुकान खोला। यह बुक स्टॉल चौराहे के नजदीक होने के कारण काफी अच्छी चल रही थी। अब ब्रजेश प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने लगा। प्रारम्भ में काफी असफलताओं के बाद वह दिन भी आ गया जब सफलता उसके हाथ लगी। वह बहुत ही खुशी का दिन था जब उसे पता चला कि उसने बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा पास कर ली है। पूरे परिवार में खुशी का माहौल था। आज वह बी.डी.ओ के पद पर नियुक्त है।

आज उसने जो मुकाम हासिल किया है, वह उसके खुद की बदौलत है। जीवन में उतार चढ़ाव तो आते ही रहते हैं, जरूरत तो है बस संघर्ष जारी रखने की। हमें जीवन की हर चुनौतियों को आशावादी सोच के साथ स्वीकार करना चाहिए।

"विषम परिस्थितियों से हारकर यदि कदम रोक लोगे तो इतिहास कैसे रच पाओगे।"

अलिषा मौर्या
एम.टी.एस

हमारे शहर में जल प्रलय

बाढ़ यानि जल प्रलय। बाढ़ क्यों और कैसे आया करती है? इसका कारण तो वर्षा का आवश्यकता से अधिक होना ही माना जाता है। पर कभी-कभी किसी नदी या बांध आदि में दरारे पड़ने या टूटने के कारण तीव्र जल बहाव से प्रलय जैसा दृश्य उत्पन्न हो जाता है।

जल प्रलय या बाढ़ का कारण चाहे प्राकृतिक हो या अप्राकृतिक। बाढ़ शब्द सुनकर ही रोंगटे खड़े होने लगते हैं कि जल प्रलय में बह या डूब रहे मनुष्य अथवा पशु आदि की उस समय मानसिक दशा कैसी भयावह हुआ करती होगी। डूबने वाला किसी भी तरह बच पाने के लिए कितना सोचता और हाथ-पैर मारता होगा। इस बात की कल्पना कर पाना बहुत ही मुश्किल है।

पिछले वर्ष हमारे शहर पटना में बाढ़ का पानी घुस आया था। बरसात का मौसम था चारों ओर वर्षा होने के समाचार आ रहे थे। तीन-चार दिनों से लगातार बारिश हो रही थी। लगातार वर्षा के कारण शहर और उसके आस-पास जल निकासी के लिए जितने भी नाले आदि बनाए गए थे, वे सब लबालब भर गए थे। नाला अपने किनारों के ऊपर तक बहने लगा था। तब हमलोग पटना शहर के रामपुर मोहल्ला में रहते थे। एक रोज शाम के समय देखा कि नालों का पानी बाहर जाने के बजाय वापस मोहल्ला में घुस रहा था। हमलोग यह सोच कर रात को निश्चिंत होकर सो गए कि वर्षा का ज़ोर थमते ही पानी अपने आप निकल जाएगा।

हमलोग सो रहे थे और पानी का निकास करने वाले सभी नाले लबालब भर गए थे। इसलिए पानी वापस आकर घरों के आँगन में फिर कमरों में भरता गया। उस समय आधी-रात से अधिक समय हो चुका होगा कि तभी उन घरों में चारों ओर बाढ़ ही बाढ़ का स्वर गूंजने लगा। हड़बड़ी में उठकर हमलोगों ने जब पाँव धरती पर रखना चाहा तो वे घुटनों तक ऊपर पहुँच चुके पानी में पड़े। बिजली चले जाने के कारण घना अंधेरा छा चुका था। घर का सारा सामान डूब चुका था जो हल्का था वह वहीं इधर उधर टकरा कर कहीं बाहर निकल जाने को बेचैन हो रहा था। चारों ओर का शोर उसमें पानी का शोर भी सम्मिलित था जो निरंतर बढ़ता जा रहा था। हड़बड़ी में परिवार के सदस्यों ने एक दूसरे का हाथ थामकर दरवाजा खोला तो पानी बदबू कर रहा था। सिर-मुंह सभी पानी के उफान से भीग गया था। गोद में उठाए बच्चे पानी की मार से चीख उठे। देखते ही देखते पानी का स्तर कमरे के ऊपर उठने लगा। बड़ी मुश्किल से ऊपर जाने की सीढ़ियों तक पहुँचे, पानी से संघर्ष करते हुए हम छत पर पहुंचे। मुड़ कर देखा तो ऐसा लगा कि जैसे पानी भी सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ हमारा पीछा कर रहा है।

सभी लोग प्रभु राम का नाम जपते हुए एक दूसरे को निरीह आँखों से देख रहें थे। हमलोग अंधेरे में छत पर ही बैठे रहे। सभी लोग सुबह होने का इंतजार करते रहे, हमने ऐसा देखा कि हमारे आस-पास के सब लोग भी छत पर बैठकर किसी न किसी भगवान के नाम का जाप कर रहे थे। सुबह किरण फटते ही हमने देखा कि किश्तियों में बैठे कुछ स्वयंसेवक, सैनिक आदि हमारी तरफ आ रहे थे।

दिन उजाले में वह सारा दृश्य और भी भयानक लग रहा था। नावों में आए सहायता दल अपने साथ खाने-पीने का सामान लेकर आए थे। और कुछ ही समय बाद कुछ हेलीकाप्टर जो कि सैनिकों से भरे हुए थे हमारे ऊपर मंडरा रहे थे और बाढ़ में फंसे लोगों को सीढ़ी डालकर निकाल रहे थे। हमने भी उनके साथ वहाँ से निकल जाना उचित समझा।

हमलोग वहाँ से निकलकर राहत कैंप में बड़ी मुश्किल से एक दिन व्यतीत किया और उसके बाद अपने ननिहाल में शरण लेनी पड़ी। उस बाढ़ में क्षतिग्रस्त हुए सामानों की भरपाई तो आज तक भी संभव नहीं हो पाई। ऐसा होता है जल-प्रलय।

राजेश कुमार
डीईओ

जिजीविषा

कोरोना तुम बेहद छोटे हो
इतने कि
चुटकी से मसलने लायक नहीं
फूँक कर उड़ाने लायक नहीं
शायद तुम्हारी क्षुद्रता ही
तुम्हारी शक्ति है
तुम्हारी सूक्ष्मता ही विराट चुनौती है

इधर हमें विशालता का मोह है
शत्रु भी हमें विशाल ही प्रिय हैं
शस्त्र भी विशालता देखो
हमनें टैंक बनाए
हमनें मिसाइल बनाए
हमनें परमाणु बम बनाए
पर अदृश्य के समक्ष सब व्यर्थ

तुम्हारी हमारी लड़ाई चल रही है
तुमने लाखों को रुग्ण बना दिया
लाखों की जान ले ली
करोड़ों का रोजगार छीन लिया
हमें घरों में कैद कर
दमघोंटू मास्क पहनने को विवश किया

कहीं तुम इस खुशफ़हमी में तो नहीं
कि लड़ाई तुम जीत लोगे
कि हम तुम्हारे समक्ष घुटने टेक देंगे
कि तुम हमारे अस्तित्व को चुनौती दोगे
तुम हमारी जिजीविषा नहीं जानते
तुम्हे हमारी जीवटता का ज्ञान नहीं
तुम मानव संघर्ष से अनभिज्ञ हो
तुमने हजार किलोमीटर पैदल चले
किसी मजदूर के पैर नहीं देखे
दुश्मन के लिहाज से हम बेहद बुरे विकल्प हैं

अब जब कि तुम्हारी हमारी लड़ाई जारी है
और हम 'हाथ धोकर' पीछे पड़े हैं
हम तुम्हे कहना चाहते हैं
एक दिन
तुमसे बचने का ढाल हम बना लेंगे
तुम्हे मारने का औजार भी हम खोज लेंगे

तुम हारोगे
सुना तुमने
तुम ही हारोगे
हम जीतेंगे
मानवता हारना नहीं जानती

हम जीतेंगे और सबक लेंगे
हम जीतेंगे और सीखेंगे
हम सीखेंगे कि जिंदगी अनमोल है
हम सीखेंगे कि हर जीव की अपनी सत्ता है
हम सीखेंगे कि छिटककर आई एक चिंगारी दावानल बन सकता है
हम सीखेंगे कि एक इंसान का घाव
इंसानियत के लिए नासूर बन सकता है
हम सीखेंगे कि सरहदें सब कुछ रोक नहीं सकतीं

एक दिन जब तुम्हारा आँकड़ा शून्य पर ठिठकेगा
तुम्हारा ग्राफ मुँह के बल गिरा होगा
तब दुनिया फिर खिलखिलाएगी
ये रौनक, ये मेले, ये शहरी ठेलम ठेले
फिर लौट आएंगी
ये भीड़, ये महफ़िल, ये सिनेमा, ये तमाशे
ये प्यार, ये मिलन, ये जुलूस, ये जलसे
फिर रौशन होंगी गर्मजोशी से फिर दो हाथ मिलेंगे
इंसानियत फिर कंधे थपथपाएगी
अर्से का यार फिर गले मिलेगा
लोकल ट्रेन का सहयात्री फिर बाजू थामेगा
पड़ोस का बच्चा फिर स्कूल जाएगा
हम जीतेंगे
एक दिन
हम जीतेंगे

सुस्मिता सरकार
वरिष्ठ लेखाकार

कार्यालय में आयोजित विविध कार्यक्रमों की झलकियाँ

कार्यालय में आयोजित विविध कार्यक्रमों की झलकियाँ

नशा एक अभिशाप

यह कहानी बिहार के एक छोटे से गाँव की है, एक सुखी परिवार की रोजी-रोटी से संबन्धित व्यवसाय की है। वर्ष 2011 की बात होगी, श्याम बाबू की नयी-नयी शादी हुई थी। परिवार में खुशी का माहौल था। सब लोग बहुत खुश थे। धीरे-धीरे समय बदल गया, परिवार का बोझ बढ़ता गया, श्याम बाबू अपने गाँव का सीधा-साधा लड़का था। घर का खर्च बढ़ने के कारण वह चिंता में था और उसने नए व्यवसाय के लिए पटना जाने का निर्णय लिया और वह बिहार की राजधानी पटना चला गया। नए शहर में कोई परिचित लोग नहीं थे। काम के तलाश में वह इधर-उधर भटकता रहा, मगर कोई काम हाथ नहीं लगा। दो-तीन दिन निकल गए, घर से लाया हुआ पैसा भी अब खत्म होने लगा था। उसकी परेशानी अब बढ़ती जा रही थी और वह इतना मजबूर हो गया कि उसे फुटपाथ पर रहना पड़ा। उसके पास खाने के लिए भी पैसे नहीं थे। उसी रात फुटपाथ पर कुछ लोग बैठ कर शराब पी रहे थे। उसमे से एक ने श्याम बाबू को देखा और उससे पूछा कि तुम कहाँ के हो? श्याम बाबू ने अपना गाँव भोजपुर बताया और कहा कि वह यहाँ काम की तलाश में आया है। वह आदमी भी भोजपुर का ही रहने वाला था इसलिए उससे श्याम बाबू की दोस्ती हो गयी और उसने श्याम को शराब पीने के लिए दिया लेकिन श्याम ने यह कह कर मना कर दिया कि वह नशा नहीं करता। उसके दोस्त ने बहुत अच्छी आदत है कह कर अपने घर ले गया जहां वह रहता था। वह सड़क किनारे बसे रैन बसेरे (गरीब लोगों के लिए बना हुआ छोटा घर) में ले गया जहाँ बिहार के विभिन्न इलाकों से काम की तलाश में आए लोग रहते है। कोई रिक्शा चलाता था, कोई ठेला चलाता था, तो कोई सब्जी बेच कर अपना और अपने परिवार की जीविका चला रहा था।

यहाँ से श्याम के दिमाग में भी तरह-तरह के काम नजर आए। उसने भी कुछ पैसे उधार लेकर और कुछ बचे हुए पैसे से फल बेचने का निर्णय लिया। अब वह प्रत्येक दिन फल बेचता और रात को रैनबसेरे में आ जाता जहां उसके बहुत साथी हो गए थे। सभी लोग रात को नशा करते थे, उसमे से एक ने श्याम बाबू को शराब पीने को बोला। उसने मना कर दिया लेकिन उसमे से एक ने कहाँ इसे पीने से थकान कम होती है और मेरे साथ आकर पीयो और वह आ कर बैठ गया। एक ने ग्लास में शराब दी, श्याम बाबू ने नाक सिकुड़ाते हुए शराब पी ली और सो गया। सुबह देर से उठा और जल्दी जल्दी काम पर चला गया। रात हुई और फिर वही दोस्त, वही नशा शुरू हो गया। अब यह उसकी दिनचर्या बन चुकी थी। प्रत्येक दिन का यह काम हो गया। यहाँ तक कि अब श्याम काम से लौटने के बाद खुद ही नशे की सामग्री लेकर चला आता था। अब वह उसके बिना नहीं रह सकता था। सुबह होने के साथ ही पीना शुरू कर देता था। यहाँ तक कि फल बेचने भी नशा करके जाने लगा था।

एक दिन की बात है, होली का त्योहार आने वाला था, श्याम अपने दोस्त के साथ मोटरसाइकिल से गाँव जा रहा था। गाँव पहुँचने से पहले दोनों ने रास्ते में शराब की बोतल ली और नशा किया। उसके बाद गाँव की ओर निकल पड़े। श्याम बाबू खुद मोटरसाइकिल चला रहा था। रात का समय हो गया था, अचानक एक कच्ची सड़क पर मोटरसाइकिल लड़खड़ाते हुए गड्ढे में जा गिरी। मोटरसाइकिल ऐसे गिरी कि श्याम बाबू उसी के नीचे दब गया और उसका दोस्त थोड़ी दूर जा गिरा। उसने श्याम को आवाज़ लगाई लेकिन वह कुछ नहीं बोला। वह उसे मृत समझ कर वहाँ से भाग निकला। रास्ते में एक आदमी ने यह घटना देखी और उसने उसके शरीर से मोटरसाइकिल उठाया और उसे अस्पताल तक पहुँचाया। सुबह श्याम बाबू को होश आया तो उसने अपने घर का पता बताया। घर के लोगों को पता लगा तो सभी अस्पताल पहुँचे। शरीर पर बाइक गिरने के कारण उसके शरीर का एक ऐसा नस दब गया की वह ना खड़ा हो पा रहा था ना ही ठीक से हाथ-पैर हिला पा रहा था। काफी दिन अस्पताल में रहने के बाद भी वह ठीक नहीं हो पाया। बहुत से अस्पताल का चक्कर लगाया लेकिन निराशा ही हाथ लगी। उसे पता चला कि उसके शरीर का एक नस खराब हो गया है और वह ठीक होना बहुत मुश्किल है।

अब श्याम के पास पछताने के सिवाय कुछ नहीं बचा था। अब वह अपने पैर पर खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। हम यह कहने पर आज मजबूर है कि श्याम की जिंदगी में नशा एक अभिशाप बनकर आया। इस कहानी के माध्यम से मैं यह कहना चाहता हूँ कि कृपया नशा ना करें और अपने पैसे का सही इस्तेमाल करें।

पंकज कुमार गुप्ता
डीईओ

वजन पैमाना मशीन

दूर सुदूर से आते जाते हैं लोग
रेलवे स्टेशनों एवं मेट्रो स्टेशनों पर,
साथ में होते पत्नी बच्चे लोग,
देखकर वजन पैमाने को जी करता वजन तौलवाने का।

बच्चों के मन में है अजीब सी कौतूहल,
गाँव के लोग भी है आतुर देखने को अपना वजन बल।
एक अनोखी खुशी है मन में
डालना था दो रुपये का सिक्का भी उसमें।

हजम हो गया चमचमाता सिक्का एक क्षण में,
आया न वो वजन का टिकट जिसके थे आस में।
गुम हुई वो खुशी, अच्छा खेल था वह भावनाओं के साथ,
अब लाख ठोको पीटो नहीं लगने वाला कुछ हाथ।

लगती है ये छोटी सी बात, अगर बेकार है तो मत रखो सजा के
हटा दो इसे जो खेलते हैं विश्वास और जज़्बात से ।

सन्नी कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

जद्दोजेहद

रात में ठीक से सो नहीं पाई। निशा ऊँघती सी बालकनी में बैठी थी। चुपचाप धूप में बैठना उसे अच्छा लग रहा था। छोटे बच्चे स्कूल जाते दिख रहे थे। कुछ अकेले थे, कुछ किसी के साथ। एक छोटी बच्ची साइकल की टोकरी में बैठ अपनी माँ के साथ जाती दिखी। बच्ची का मन एकदम न था। माँ उसे समझाए जा रही थी, वो अपना मन बनाने की पूरी कोशिश कर रही थी। लेकिन उसकी उम्र उसे कुछ भी समझने नहीं दे रही थी। दोनों माँ बेटी को निशा आँखों से ओझल हो जाने तक देखती रही।

ऑफिस से दो दिनों की ली हुई छुट्टी भी आज खत्म हो रही थी। उसका भी उस बच्ची वाला ही हाल था। न तो मन था न ही कोई समझाने वाला। लगा कि जो माँ होती तो उसे पुचकार के जाने बोलती। आज अचानक उसे अपने गुवाहाटी के दिन याद आए। माँ को फोन लगाया पर बात न हो पाई। बड़े बेमन से उठी और किचन में गयी। पर क्या बनाए... उसे फिर उलझन हुई। संजू अब भी सोया था। फिर माँ को फोन मिलाया। माँ ने फोन उठाया, पूछा क्या हुआ? निशा ने कहा मन नहीं है ऑफिस जाने का क्या करे? माँ ने फिर पूछा पर कुछ डर के कि कहीं तबीयत तो खराब नहीं लग रही। उसने कहा नहीं। फिर माँ ने कहा तब ऑफिस चली जाओ, नहीं तो अकेले घर में करोगी भी क्या? निशा का मन एकदम ठीक सा लगा, फिर चाय बनाई और संजू को उठाया।

दोनों तैयार होकर ऑफिस के लिए निकल पड़े। रास्ते में एक सिग्नल पर निशा का ध्यान एक औरत और उसके गोद में पड़ी बच्ची पर गया। वो औरत आने जाने वाली गाड़ियों से उस बच्ची की ओर इशारा कर कुछ पैसे मांग रही थी। बच्ची बहुत छोटी थी। सिग्नल खुल गया। संजू ने गाड़ी आगे बढ़ा ली। निशा ऑफिस आ गयी। आज मन कुछ ठीक न था। अपने सीट पर चुपचाप बैठी थी। उसका ध्यान बार -बार उन दोनों बच्चियों पर जा रहा था। फिर उनकी माँओ पर। माँ कभी बच्चों को छोड़ती नहीं। चाहे बच्चा स्कूल जाए या ऑफिस। माँ समझती है, फिर समझाती है।

निशा को किस बात की उलझन हो रही थी? बहुत सारे सवाल थे...वो कितना समझेगी? कैसे समझेगी और जो समझ के उसे ठीक लगेगा वो कितना ठीक और सही होगा? किससे अपने मन की बात करें? माँ के अलावा कोई सूझा ही नहीं। माँ ने फोन उठाया। उसकी परेशानी भाँप गयी और कहा- बेटा इसके लिए किसी ट्रेनिंग की ज़रूरत नहीं पड़ती। सबको ये उलझन होती है पर उसे समझने और करने की ताकत भी खुद ही मिल जाती है। ये ठीक वैसे ही है जैसे हम ज़िंदा रहने के लिए सांस लेते हैं। बस अपना खयाल रखो।

निशा की इतने देर की जद्दोजेहद अचानक खत्म हो गयी। उसने एक ज़ोर की सांस ली और अचानक पेट में कुछ हलचल हुई। आज पहली बार उसके बच्चे ने पेट में लात मारी और अपने होने का पूरा एहसास करवाया। उसे लगा कि उसके बच्चे ने खुद ही उसकी जद्दोजेहद समझ ली और उसे जवाब दे दिया। उसकी आँखों में आँसू आ गए। ये खुशी के भी थे और आत्म संतुष्टि के भी। निशा ने फिर माँ को फोन मिलाया और बताया। उसे माँ का भी गला रुँधा-सा लगा पर खुशी तो उनके आवाज़ में भी उसे अपने जितनी ही लगी।

प्रियंका संजीव सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ

1.	above given	उपरलिखित, ऊपर दिया हुआ
2.	acceded to	स्वीकार किया गया
3.	acceptance is awaited	स्वीकृति की प्रतीक्षा है
4.	accepted provision	अंतिम रूप से स्वीकृत
5.	accountancy expenses	लेखाकरण व्यय
6.	accumulated balance	संचित शेष
7.	acknowledgement is awaited	पावती की प्रतीक्षा है
8.	action is underway	कार्रवाई की जा रही है
9.	address all concerned	सर्वसंबंधित को लिखा जाए
10.	bill of payment	भुगतान बिल
11.	bring into notice	ध्यान में लाना
12.	deems fit	उपयुक्त लगता है
13.	discharge from service	सेवा से मुक्ति
14.	dispose of	निपटाना
15.	duly authenticated	सम्यक रूप से प्रमाणित
16.	duly complied with	विधिवत पालन किया गया
17.	extension of leave	छुट्टी बढ़ाना
18.	false billing	झूठा बिल बनाना
19.	false testimony	मिथ्या साक्ष्य
20.	for comments	टिप्पणी के लिए
21.	for approval	अनुमोदनार्थ, अनुमोदन के लिए
22.	handwritten document	हस्तलिखित दस्तावेज़
23.	hard and fast rule	पक्का नियम
24.	I am directed to	मुझे निदेश हुआ है
25.	I authorise you	मैं आपको प्राधिकार देता हूँ

अतुल कुमार (लेखाकार)

कार्यालय में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेते कलाकारों की झलकियाँ

कार्यालय में आयोजित शिशु उत्सव की झलकियाँ

Designed at M/s.AMIT OFFSET- 7,Waterloo Street, Kolkata 700069 Mob: 9339764686